



```
١٠٥٠ مينيد عينيل عمين عميل إن عبولي:
         २००० होतेगारी सारत
          १००० करे साथ ग्रास्ती हरा.
           tore major faires
            १४०० रूपार्यनेन प्रथम प्रारीका
            १००० हरन केर मार्ग है की सा
                       १००० स्तरत तेया मान है कि जा-
                       १००० व्यवस्य नेप्रद सारा मे
                         १००० हात्र इंडिंग्सी
                          रं••• बर्स्ट्रेट्स्स क्ष्म्यान्त्र
                           $ ... NAME AT 4-14-4
                            for bearing water
                     Fore States and So at
                      المراج المراجع المراجع
                      **** # # # 1 92 t.
                       **** **** * 11 11 11 11
                         good State of the good of the
                                      eig ad Su
```

भी रत्नप्रमस्थी सद्गुरुभ्यो नमः

ষঘ ধী

शीघवोध या थोक नापवंध.

भाग १३ वा.

-23-28.28.28.20-

थोकडा नम्बर १.

बह्श्रुनी कृत १४ राज.

जहापर पाचाम्सकाय है उन्होंको लोक कहा जाते हैं वह लीक असम्प्यात कोइसकोड योजनके विस्तारयाला है उन्होंको परिमाणके लोगे राज्यत दो गढ़ है। यह राज मी प्रसाद कोड़े नहीं हो जन्म है। उत्तर राज्य अधीलोकांक राज परमाण लीक कर जाती, दो उत्तर अधीलोकांक स्पेचांके परस्तु होता है। यो परिमाणकांने विस्तार स्पेचांके राज्य है। से उत्तर स्पेचांकांने विस्तार



						i	₹						
त्त्रवंड.	६४ सब	800	4038 11	1600 11	२३०४ ,,	4808 "	3638 %	सप्डराज	ई जिसे या	१॥ राजवि-	में तव २॥		गा देवलोक
419.	१६ राज	% oo}	२४६ "	" co8	५७६ "	क्ष्यह "	" 8±0	मव मनगत १७४ परत्रात ७०२ स्विशास १८०८	देवलोक आता है जिस्मे आ	राजउध्ने जाव तम १॥ राजवि-	र पाव राज जावे	,	राज जाते हे मुहांपर तीजा चाया देवलोक
परतर.	8 सिंब	24	30	% oo }	488	388 33	888 "	७०२ सन्	३२ हात है। मम्मितनाम १। राजउध्ये जांचे तय पेहला दूसरा दे	यादो राज	स्तार गहांसे	chr.	गत है महा क
घनराज.	=	•	:	:	*	-	=	स्राज	पहल	खांस	राजावि	देवलीक है	1
घनर	-	ur	w	0,	m	22	₩ \$	1	<u> </u>	sto	6	16	£,4
4=	13	:	:	:	:	:	:	3	12	गम्	वस	स्यान	がし
पहुंली.	-	₹	æ	>	*	<u></u>	-5	नगन	न उध्दं	र गज़	म भूति	मू सम	
नार्टी	EL	:	:	:	:	:	:	मब म	ã.	न्य एन	पाय राज जात्रे	हे बहा पर मुध्म	गान देवलो
F	"	~		^	a		~		हात है मतनाम	, <u>T</u>		13.	HI.
ਜ.ਜ	रन्यम्	माक्रम या	गानुप्रभा	गरुप्रमा	मियमा	नमप्रया	नमनमार	1	१४६४६ होत् सभूमित	रो र. सटे भी आये तय एक शास्त्रिम्तार	स्तार है नहांम	तजानस्तात ह	मागम इसान देवलोक्स

वस्तिनिर्देशमें नम कि अपेचा अवश्य होती है, वह नम मीख्य दो प्रकारिक ई. (१) निश्चयनय, (२) व्यवहारनय-जिस्मे निथयनयसे लोकका मध्यभाग प्रथम रत्नप्रमा नरकके श्चवकाश श्रन्तराके शतंख्यातमे मागमें हैं. बास्ते श्रधोलीक संभगितलासे साधिक सात राज है, और उर्घ्यलोक कुन्छ न्यन सात राज है तथा वीरच्छालोक जाडा १००० योजनका

उर्ध्वलोक और तीरच्छालोक उर्ध्वलोकके सेमल माना जाता है. वह व्यवहारनयिक अपेचासे ही यहापर बतलाये जावेगा. प्रथम च्यार प्रकारके राज होते हैं उन्हीं को ठीक (२) समकता.

है, परन्तु व्यवहारनयसे सात राज श्रधोलोक श्रीर सात राज

(१) घनराज-एक राज लंबा. एक राज चोडा.एक गज जाड हो (२) परत्रसाज-एक घनराजका च्यार परत्रसाज होता है

(३) सूचिराज--एक परनरराजका स्थार खाचिराज हं(ता है.

(४) यरहराज एर यश्चिमानका न्यार सरहराज टीना है

श्रधीलोकसात राजरा अध्यामामें हैं मार राह लोबचे सार नरहर. पर प्रत्यक नरह **रहे**कर राहि

शिक्षा प्राप्ते दर्गाः



छठा देवलोक्से पात्र ०। राज उच्चे जाने तब माठना महायक देवलोक चाना है यह च्यार राजके विस्तारपाला है बद्दमि पाय राज उर्ध्य जारे तब भाट्या सहस्र देवलोक श्यार

कादबा देवलीक्षे भादा था राज्य में जाता है तव नरमा दशास देवलाक चाता है वह बीन एउट राजार राजा दे बहुनि बादा । मन इन्हें ताना है का रावारा अप इवा दवलाक याला है रह घर गर र र सर र र र

वहां च्यार राजियस्तार है वहां पर सतत्कुमार महेन्द्र देवलोक भागा है.

मनत्कुमार महेन्द्र देवलीक्से प्रम 💵 राज उर्घ जाने तर

परिया बडादेवलोक भाता है यह पांच राजका विस्तारवाला है। याच्या देवलोकमे पाव । राज उर्ध्व जावे राव छठा

राजके रिम्लारवाला भारा है।

संतक देवलोक भाता है यह भी पांच राजके विस्तावाला है।

, rute	मात्र १३ मात्र	3		~ · ·	ນ (6 6 7	200	U	(Y)	บ บ บ	200	°°	 	Š	33
# # # # # # # # # # # # # # # # # # #	ม	ď.	w.		9	330	ω. ο	300	χ. 	æ	કુ 	e ;	*	22	۳. س	ı
44.14	5.	: ::	æ	₩ ₩	ដ	ω. υ.	. 20	÷	, ,	 	z u	3311	<u>۔</u>	?3 23	,, HB	ถ
संस				, a.												
iteli	1(3		; ;	= ;	"	:				ر:		;	; ;	· :	, H	
141. 11	28. 71. 1	: =	· ;	: :	. = .	:	: 141 :	: ;	÷	;	; =;	: =	; 3	: E0	÷ :	Ę
\$ U-1-X	200	Direction to	200	1111 (TILL)	i t	3-7 6240	1) 14.4 14.1				\$	18-22 60	Title.	110 4	46.73	

६ उर्घलोकके सर्व पनराज ६३॥ परतर २५४ धनि

१०१६ सपदरात्र ४०६४ तीरच्छो होक एक राजिपसार सत्ता है जिन्में बर्मस्यातदीय सपुत्र हैयन्तु १८०० जोजनका सरपणार्मे होनाये किसी राजकी संख्या नदी है. सरप्यसा कोकके घनराजादि संख्याः

(१) पनगत्र २३६ (३) विधास ३८२५ (२) पनगत्रत्र ६४६ (४) संगदरात्र १४२६६ सेत्रं असि सेवं अति समेव सद्यस ।

इति स्टब्स्य सम्बद्धाः (स

थोकटा नम्बर ३ वहतम्य मध्यस्य

्राहर प्रशासन्ति । इस्ति । इस् इस्ति । इस्ति (७) पात्यडेहार (८) श्रन्तराहार (६) पात्यडे२श्रन्तरो◆ (१०) घणोदछि॰ (११) घणवापु॰ (१२) गुणवापु॰

(१३) याकाशहार (१४) नरकश्यन्तरो० (१४) नरकावासा

(१६) ब्रलोकान्तरोः (१७) वलीयाद्वार (१८) चेत्रवेदना०

(१०) देववेदना० (२०) वक्रयहार (२१) अन्पवदृतद्वार

(१) नामद्वार—गमा चनशा शीला श्रजना रीठा मघा माधवतीः

(२) गोत्रद्वार--रत्नप्रभा शार्कर० वालुकाप्रमा पंक-प्रमा भूमप्रभा तमप्रभा और तमतमाप्रमा ।

(३) जाडपणी-पत्यक नरक एकेक राजाकी जाडी है।

(४) पाइलपणो—पहेली नरक एक राजविस्तारवाली है, दूसरी ना राज, तीसरी न्यार राज, तीथी पांच राज, पांचमी है राज, छठी साडाहे राज, सातमी नरक सात राज वे कि तामें है परन्तु नार्यकरें निरंगा एक राजके विस्तारमें है उन्हीं की वसनाली कही। जाती है के विस्तार पांच वसनाली कही। जाती है के विस्तार पांच राजके वालके वालके पांच राजके पांच राजके वालके पांच राजके पांच राज

प्रत्वीपस्टडार-प्रत्यकः नारकी असस्यात असंस्थात जोजनिक है परन्तु प्रश्वीपस्ड पेटली नरकका १०००० दूस रीका १६००० तीमरीका १०००० चौर्याका १६०००० पांचमीका १६००० छठीका १०६०० सातमीका १०००० मोजनका है. (६) करंडद्वार-पेहली नरकमें ३ करंड है. (१) धारकरंड

शोला जातका रत्नमय १६००० जोजनका (२) आयुलपहुल पार्णीमय =०००० जोजनका (३) पंकपहल कर्दममें =४००० जोजनका सर्व १८००० जोजनका पेडली नरकका पएड है शेष ६ नरकमें करंड नहीं है. (७) पान्यडद्वार (८) बन्नराद्वार पेहली नरक १८००० जीवनकी है जिम्में एक हवार जीवन उपर एक हजार जीवन निये छेडके मध्यमें १७=००० जो० है, जिस्में १३ पान्यडा और १२ बन्तराई भन्तरोंमें २ उपरका धन्तरावर्तके शेष १० भन्तरोंने दश जातका श्वानपतिदेव निवास करते है शेष नग्कमें स्वनपतिदेव नहीं हैं. पान्यता है यह प्रत्यक पान्धह ३००० ओजनका है जिल्में उपर और निये हजार हजार जी-

जन छोड़ रे मध्यमें १००० जोजन पएड है जिस्से नारकी के

उत्तात्र होने योगांतुंभीयों है इसी बाजीक छठी नरक शक धाने सपने प्रशासकार १००० तीर उपर १००० तीर निषे देवके शेष मध्यमें दूसरि नरकमें ?? पान्पता ?०

कल्दर, नीमगीने र पान्यदा = कल्दरा चोधीने ७ पान्यद ६ क्रम्ब, श्रेनिमेने । पान्यको ४ मन्त्रा हरीम ३ प्राप्यका २

ग्राम्याः साम्भाः साम् १ ० । देशसः 🕡 साम

१८६० डा चित्र हार्रद कार्य ... सम्बद्धाः स्टब्स रहा । तम् प्रमा स्ट्री

- (६) पात्यदेपात्यदे प्रन्तरद्वार-पेहली नरको पात्यदे पात्यदे ११४=२१ दुसँस ६७०० तीमरी १२७४० घोषी १६१६६३ पांचमी २४२४० सठी ४२४०० सातमी नरको पात्यदा एक ही है.
 - (१०) घटोदद्विहार प्रत्यक नरकरण्डके निचे २०००० हो० कि घटोदद्वि एकादन्या हुया पाटी है.
 - (११) घएवापु-प्रत्यक नरकके घरोदक्षिके निचे भर्म-ख्यात २ जोडनिक घनवापु है पकावन्या हवा वासु है.
 - (१२) हट्यापु-प्रत्यंक नरकके पर्यवापुके निचे असं-ख्यात २ खोडनके हट्यापु पातला वापु है.
 - (१३) आकाश-प्रत्यक नरकके तृद्यबाहुके निचे असं-रूपात २ बी॰ का श्वाकाश है अर्थात् आकाशके आधार तृद्यबाहु है तृद्यबाहुके आधार धनवाहु है धनवाहुके आधार धनोदन्दि है यनोदद्विके आधारमे पृथ्वीपएड है.
 - (१४) नरक नरकके अन्तरा-एकेक नरकके विचर्ने अमंख्यान अमंख्यान डोज्मका अन्तरे हैं.
 - ्रेश नरकावासाक्षर-नरकावासा दी प्रकारके हैं

 र कमण्यात बीडमके विस्तारवाना जिस्से क्षमंख्यात तेरीया
 है सण्यात तो जिस्से सण्यात तेक्षेप है सब नरकावा
 सौक पाव विभाग कर दीया जाय किस्से स्थार विभाग तो

जोजनके नरकायासींका अन्त साथे स्रोर कितनेकके सन्तर्भी मही आवे. (१६) अलोक अन्तरा० (१७) पलीपाद्वार-अलोक

चोर नारकीके चन्तर है जिस्में तीन तीन प्रकारका गोल खडी माफीक बलीया है वह यंत्रसे देखी.

रतन शा या पं० प्रम० तम० दलोकसन्तरो | श्रक्ता १२३ १२३ १४

सियामंख्या

।योददि

स्यवाय

कावाय



बीलकुल सराव शस्त्रादि बनाते हैं या बज्रमुख कीडा बनाके दसरे नारकीके शरीरमें प्रवेश होता है फीर बड़ा रूप बनाके शरीरके लगड खगड कर देते हैं.

(२१) अल्पावडुत्वद्वार.

(१) स्तोक सातमी नरकके नैरिया. (२) छठी नरकके नैरिया थर्म० गुणा.

(३) पांचमी नरकके नैरिया धर्मा गणा

(४) चोथी नरकके निरेषा अमं० गणा

(४) तीजी नरकके नैरिया अमं श्राहा (६) दुसरी नरकके निरेषा धर्मं गुणा

.७) पेदली नरकके निरिया सम - ग्रह्मा

हर्तिके निरूप पर भी एक राकतु पर नाम्न दंड रादि बोक्यम ५ त'तरे स्थान स्थानक लोग्या है। इतिः

भव भने संब भन नमेव सञ्चम्

थोकडा नम्बर ३

बहूत सूत्रोंसे संग्रहः

(भुवनपतियोंके २१ द्वार.)

(१) नामद्वार

(**=**) चन्हद्वार । (१४) देवीद्वार

(२) वासाहार (६) इन्द्रहार (१६) परीपदा॰ (३) राजधानी (१०) सामानीक॰ (१७) परिचारणा (१) समाहार (११) लोकपाल॰ (१८) वक्यधार (१) भ्वनसंच्या (१२) ताववेसका (१६) अवधिहार (१३) आत्मरचक (२०) सिद्धहार (७) वस्रहार (१४) अनकाहार (२१) उत्पन्नहार

- (१) नामद्वार--श्रमुरङ्मार नागतुमार सुवर्धकुमार विगुन्कुमार श्रमितुमार द्वीपकृमार दिशाकृमार उददिङ्कमार वायुकुमार स्वत्त्वमार.

राजनानी नीरण्या भोडाहे द्वीप सपुर्व है यथा असीरहरी रा स्कानी राम जरन्त्रीय है मेरवर्गन व दक्षिणकी गरी भागित्रात दीन बनाइ चना बान वर एक बाठलापर दीव बाला उन्हेंवि ४२० ६ ब्रांचन जाते वर रूपक उल्लाल पर्यंत्र धारे बद पर्यं महरूर बाच देवाहै वर्षक और ? साइव धार्मानेहैं रेक्वरे क्र हिल्लाप ६०३ मध्यमें ४०५ एक विकारकाली है। पर

क्रम प्रशेषाय मुगोर्ज व है उत्ती परिवह उपर तक सर्वार उपयानात है अने हैं प्रात्य सह हेप मेहन जन्मा है देशी चान राहते चान पानदामानम प्रकृति हते है। क्रेटी महित्री

\$3. 8820000 at the will regard agine an attit करण है एक्टिक क्रन्टर उ००० आवन प्राप्त करीवर नगी. क्ट्रींड क्यर करा, राजको काली है पर राजकी है क्य

TER CHAPTER ESTRONS & THE TERMINE ent to an in the back was to all with a sound of the grade and the g

The second of the second

शोभनीक है इत्यादि श्रोर भी ६ निकायदेवोंकी राजधानी दाविणकी तर्फ है इसी माफीक उत्तरदिशामें भी समसना परन्तु उत्तरदिशामें तीगच्छउत्पात पर्वत है.

- (४) सभाद्वार-एकेक इन्द्रके पांच पांच सभा है (१) उत्पात सभा (२) श्राभिशेष सभा (३) श्रतंकार समा (४) व्यवाय सभा (४) सीधमी समा
 - (१) उत्पात सभा-देवता उत्पन्न होनेका स्थान है.
- (२) ऋभिशेष समार्मे इन्द्रका राजव्यभिशेष कीया जाता ई.
 - (३) श्रतंकार सभा-देवतोंके श्रृंगार करते योग वस्न-भूषण रेहते हैं.
 - (४) व्यवाय सभा-देवतोंके योग धर्मशासका पुस्तक रहेते हैं.
 - (४) मौधर्मी सभा-जहां जिनमन्दिर चैन्यन्यंभ शखकोष आदि हे त्रोर सधमे सभामें देवतींके इन्साफ कीया जाता हे इत्यादि.
 - पः भुवनसंस्थादार-भुवनपतियोंके भुवन्छ७२०००० है। क्रम्म ५०६०००० भुवन दक्षिणदिशामे है ३६६००००० उनरको तके हैं. देखी येत्रमे---

		Ì		ľ		1
१. भुगनपति.	द्विष्यदिशा.	Ė	उत्तरदिया	Ė	कुलभुवन,	Ė
014hz	200	BE	*	बद्ध	35	H 4
41413	ያ የ	•	ŝ	*	ຜູ	=
म स्माहरू	n n	:	30	#	ğ	=
117.1	స్త	2	es.	*	9	=
Thin	%	=	35	2	30	æ
11.11	30	ŧ	8	=	Š	=
111-51	20	=	3	=	a) m	=
स्था ।	ŝ	ŧ	w.	:	9	=
पाना .	2	2	ეი თ∕	=	w	2
स्तर्भः	ŝ	:	er.	=	9	=

				8	ø						
	उत्तरेण्ड	यन्तर	Zeighib.	السائزاسال	इत्सम्बर्	यांप-मान्य,	litatus "	अन्तप्त ,,	त्रमृत्तवहान,,	प्रवंतन "	महापीष ,,
(६) वर्षा, (७) पस, (८) नन्ह, (६) इन्द्रं	द्यागान्द्र	चागेन्द्र	utiles	मणुद्भ "	मस्योग	मिषिगिंग,	**************************************	अल्पित "	यगूतवाति,,	inter "	मंग ,,
, (ر) المعدد	المله قله	न्यामीण	नायाभाग	मेर्ग्ड	त्त	म्लय	(An	यभ	==	मंगर	यद्वमान
, (७) मस	112 111	TIM	निन्ध	मंत्रा	निना	निना	निमा	निना	मुगैत	पन्पि पूर्ण	मुगेत
(६) यमाँ	112 111	f.rmi	न्सन्बन्ध	ry.(n)	11:11	1141	गना	2 % 31	ग्रनम्	મામા	ग्रमण्

. 11.

. 12.

: 28 8:

5 tr

0.53 (·)

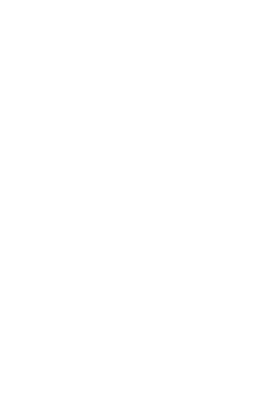
÷ 20 . •

· 3) (5)

ob ()

1701 Min





षोच प्रकारकी है यथा मनपरिचारखा रूप० शब्द, स्पर्ग्न० कायपचारल-मनुष्यकी मार्फीक देवांगनाके साथ भोगविलाश करे इति. देखो परिचारखापद.

(१८) वैक्रयद्वार—चमरेन्द्र वैक्रयकर भ्रवनपति देव-देवीने सम्परण जम्बद्वीप भरदे धर्मण्यातेकी शक्ति है एवं

ममानिक लोकपाल तावतीमका और देवी परन्तु लोकपाल देवीकी शक्ति मंख्यातेदियकी है एवं बलेन्द्र परन्तु एक जम्बु-दिप साधिक ममकता शेप १८ इन्द्र एक जम्बुद्धिप मरे और सपके मंग्यातेदियकी शक्ति है देवनोंके वैक्यका काल उ०

१४ दिनका है. (१६) व्यवधिद्वार—मगुरङ्गारके देवता सवधिव्वानमे ब॰२४ बोबन उ॰ उर्घ्य मीपमें देवलोक स्रो॰ तीमरी नरक

तिर्वेश्चर्यस्पाते द्वीप समुद्र श्रेष २ देव उ० उर्ध्य जोतीपीसॉके उपरका तला सपी० पेडला नरक तीर्वश्मरपातद्विप समुद्र देखे. (२०) मिद्धदार—सूरतपतिर्योगे निकल मनुष्य हो के

(२०) मिद्धडार---श्चरमयिनयाम निकल मनुष्य हो क एक समयमे १० जीउमीच आर्थ देवीमे निकलके एक समय ५ डीच मोच आर्थ

(२१) उत्पन्न-सर्वे प्राया भूत जीव सत्व शुवनपति देवों देवी पर्शे पूर्व अनन्ति अनन्तिवार उत्पन्न हुवे अर्थात देव होनेपर भी जीवकी कुच्छ भी गरज सरे नही वास्ते हानो-धमकर सात्माको श्रमर बनानी चाहिये इति.

सेवंभंते सेवंभंते-तमेवसचम्.



थोकडा नं. प्र

वहृत सूत्रसे संग्रह.

	(ध्यनर देवांके द्वार २१	}
(१) नामद्वार	(=) चन्द्राम	(१५) वैकयद्वार
२) वामाद्वार	(६) इन्द्रद्वार	(१६) अवधिद्वार
🚁 नगरद्वार	्रं पामानीक देव	(१७) परिचारसा
ट राजधानी	(१८) आत्मरचक्	(१८) मुखद्वार
। समाहार	. १२ परिषदाद्वार	(१६) मिद्रहार

किंपुरव, मोहब, गमर्ब, आणपुन्य, पाणपुन्ये इशीवाइ, शुह्वाई, कंडे, महाकंडे, कोहंड, प्यंगदेवा, इति. (२) वासाद्वार-च्यंतर देव काहापर रेहते हैं ? यह रत्नप्रभा नरक जो १८००० जोजनकी जाडपणावाली है

(६) वर्णहार (१३) देवीहार (२०) भवदार

जिस्मे एकहजार उपर श्रोर एकहजार निच छोडनेसे मध्यमे १७=००० जोजन रहेती हैं इस्मे उपर जो एकहजार जोजनका पएड था उन्हीकों एकसो जोजन उपर और एकसो जोजन निचे छेड देनामे मध्य ८०० जोजनका पएड है इन्हीके अन्दर बांग्रामित्र आठ जातका देवता निवास करते हैं यथा पिशाच यावन गंधर्व और जो उपर १०० जोजनका पराड था जिस्मे १० जोजन उपर और दश जोजन निचे छेडकर मध्यमे ८०

बोजनका पण्ड है जिस्से आठ जनाका व्यवर देव निवास करते है

वनगढार—इसंग्डारमं बताये हवे स्थानमे तीरच्छः नोकमे बोलमित्र और व्यवर देववोंके असरवाने नगर है वह नगर धसंख्याते और संख्याते जोजनके विस्तारवाले हैं सर्व रत्नमय हैं परिमाख भुवनपतियों माफीक.

- (४) राजधानीद्वार—वांखिमत्र झाँर व्यंतर देवांकी राजधानीयाँ तीरच्छा लोकके द्वीप समुद्राँमें हैं जेसे भुवनपित-यांके राजधानीका वर्धन कीया गया था उसी माफीक परन्तु विस्तारमे यह राजधानी कम है प्रायः १२ हजार जोजन के विस्तारवाली है सर्व रत्नमय है.
 - (४) मभाडार—एकेक इन्द्रके पांचपाच समा है यथा
 (१) उत्पातसभा (२) भ्राभिशेषसमा (३) श्रलंकारसमा (४)
 व्यवायसभा (४) सीपसेसभा विस्तारभुवनपतिसे देखीं.
 - ६ वर्षाद्वार देवनोंका शरीरका वर्षा-'यद्य पिशास मार्थर गया दर्शा स्वारंका वर्षा श्याम है किनरदेवोंको सन्तः गण राज्य भार 'कपुरपकः वर्षा पवन्ती भृतदेवोको स्वाकृता स्मामाणक स्वत्रदेवाक समझना

प्रथा र अपाचि राज्य भूतव निलाद्य एज विद्यार विद्युरप्रव पालाद्य माहरस् स्थादवे स्थासद्य सुरूपेन्द्र

11.1.2 11.1.2

414.5

141.5

ग्राचकेदो इन्द्र कालेन्द्र

के दो इन्द्र

: 41

* * * *

,,	पूरगन्द्र	माणभद्र ,,	वडग्र
त्म ∙,	। मिम	महाभिम	खर्द्रगउपकर
झर ,,	किंद्रार	किञ्चल	माशोकप्रव
Test "	मापुरुष	महापुरुष	शस्यकपृष
रम्म "	भ िकाय	महाकाय	नागइच
र्घा,,	गतिरनि	गनियश	तुंबरूप्रथ
रशपुन्य,,	मनिविद्यन्द्र	सामानीहरू	कदंबष्टव
गपुन्ये ,,	चाररन्द्र	विधासन्द्र	गुलगर्द
विवादी,,	व्यक्तिक्ट	श्रापिपाल ॰	वडमूच
नवादी .	स्थारन्द्र	मंह योग्न्ड	मरम

महाकालेन्द्र

प्रतिरूपेन्द्र

' रजा। स

f'ERFIA.

यह धन-इ

14177755

याशाकपृत

नग्यक्त मुख

नागाय

नवस्त्रच

- (१०) मामानीक झार-मर्च प्रत्नोंके स्थार स्थार प्रसार क सामानीक है.
- (११) प्राप्तगणका-सर्व इन्होंके मोले मोले हजार देव सन्मरणक है.
 - (१२) परिपदा द्वार-कार्य ध्यनपनियोक मार्फाक.

षरिषद्।.	देव परिपदा.	देवी परि॰
श्मितः	E000	1 to
न्धिति	•॥ पन्यो•	ा गापिक
मध्यम	\$1000	800
स्थिति	•॥ प॰ न्यून	ofdo
राष	12000	800
स्थिति	ा माधिक	ा न्यून

वे देवी अन्यक हस्त्रके स्थार त्यार देवी है एकेक इंडेक्ट त्यार त्यार देवीक पारश्रार है एकेक देवी हजार हजार कर उन्नय कर शक्ता है.

[ा]के रहे के जारहरू सामान के स्वास हो है। ताक

जम्मुद्रिय म्यंतर देव देशीका रूप वेक्य बना शके वै संख्यातिकी शक्ति है. (१६) व्यवधिज्ञार-बालभिष देश व्यवधिज्ञानमे जेर २४ जोजन उ० उन्ते जोतीगीयोके उपरका गना अधे। पेहनी नरक तीर्पं० संख्यातेदिय समुद्रः (१७) परिचारणाद्वार --सर्व देवीके पाच प्रधानी परिचारणा है यथा मन, रूप, शुष्ट्र, स्पर्श, ओर कायपरिचारणा भर्याद मनुष्यकि माफीक मोगदिलाश करते हैं. (१८) मुखदार- यहा मनुष्यलोक्तमे कोइ मनुष्य युवक श्रवस्थामे मनमोहन यक्क सन्दर जोवन रूप लावएपवानुमे

सादि कर विदेशमें द्रव्यार्थी गया था। बहने मनोद्रव्छत द्रव्य लाया दोनोंकी परिपक जोयन सवस्थाम अवादित सुख भोगरे उन्होंसे व्यंतर देवीका मुख अनन्तगुण है (१६) सिद्धहार आणामवास (नकलक मन्ध्यस<mark>वकर एक</mark> समयमे १० ओर दशस (नकलक र ताकणक समय भारत तात है।

🕶) सप्रदार—गणाम् । 🕫 प्रशर समारमे भव करेतो १ ५-३ उत्कष्ट पनन्त सर कर शक्त ड

(२१) उत्पन्न_{ार} सर्वाण न । जावसन्त्र का**णामप** देवती पण एकपार नहीं (कर्न् अनन्ती अनन्तीयार उत्प**र्श**

हों है हमीन पैतन्यकि पित्रता प्रगट नहीं होती है यह से पैद्यालीक मृत्र है पार आसीक मृत्र भी जिनेन्द्र हेपीने धर्मको संबोधार परनेमें प्राप्त होता है, होते.

मेवंभंने सेवंभंने-नमेबस्यम्

-रुख्युख्य थोवडा नं. ५

पहुत सुत्रीसे संप्रह करके.

. बाहीदीयों हार ३१)

जोनीपी देव दो प्रकारके हैं है कियर है पर जिस्से कियर जानापी पान प्रकार पे हैं पन्द्र स्थ प्रदान स्था भीर नाता प्रदान है प्रवाद कर पर है है है सम्प्रान है भी प्रकार है पर नाता प्रवाद कर है कि स्थापन है भी प्रकार है पर नाता है भी प्रकार है पर नाता है पर

कर गाँ जोतीपी लिए हैं इन्हीका परिचार विगरद कन्द्रेड बंदिशियां माधीक समस्ताः महाहडीएकं मन्दर तो जीतीर्ग है यह पर-अन्य करने राजे है भीर अमण करनेमें है। क्या मानते है उन्हीं विस्तारके लिये जोतीयी चकता योकडा चन्द्रप्रमाप्ती और हुई वक्षामीने निर्देश परन्तु सामान्यताने यहाँपर ३१ द्वारमें बोरी र्गणीका बोक रा जिल्हा जाता है कि माधारण मन्त्यवि इन्हेंक चाम उदा मह. (२२) देवीआ (१) नामडार (२) शनिडार · २) बापादार (१३) नापत्तपदार (२३) मनिहार ा राजवानी १४ वास्त्र ... (22) Water न पना 💮 नाममा , 🙌 नेप्रम , र स्ट्रांट १५ व्याप्त १५ प्राप्तिः ं विभागाम् 1945 4 4 4 5 165 5 1 4 4 9 5 1 1198 47 4 यभागाहरी न

(२) वासाद्वार-जोतीपी देवों मा तीरच्छालोकमें असं-ख्याता चैंमान है वह चैंमान संभूमिते ७६० जोजन उर्ध्व जावे तव तारोंका वैमान आवे उन्ही तारोंके वैमानसे १० जोजन उर्ध्य जावे तब स्र्येका वैमान आवे अधीत संभूमिसे =०० नोजन उर्घ्व जावे तब ध्र्यका वैमान भाता है. संभूमिते == जोजन उर्ध्व जावे अर्थात् पूर्व वैमानसे =० जोजन उर्घ्व जावे तब चन्द्र बैमान श्रावे चन्द्रवैमानसे ४ जोजन भोर संभूमिसे ==४ जोजन उर्घ्व जावे तब नवत्रोंका वैमान श्रावे वहासे ४ जो० श्रीर संभूमिसे === जो ॰ उर्ध्व जावे तब बुध नामा प्रहका वैमान आवे वहासे ३ जो ॰ संभूमिमे ८६१ जो शुक्त ग्रहका वैमान आवे. वहासे ३ जोजन और संभूमिने ८६० जो० महम्पतिग्रहका वैमान आवे. बटमें हे तो। बीर सभामिसे = अ मगलग्रहका बैमान आबे बहास ३ जोजन और संस्थिते २०० जोजन उथ्ये जावे नद लानधर प्रत्का वैमान सार्वे अयान ७२० जोजनसे २०० न तम 'बर्चम । ' लोजनक नार्पणे और bu नच नीज दक्षा प्रकारम् सर जीवादा है।

अरुपा राग वयं चन्द्र सत्तव वयं शुक्र हर सगः शति तस्पर्ममे ७० १ ९०१ - १० ११ १० १० १० १०

रिलक्के नारोके वेकान कि लेखनार सव स्थानवा र

ग्यनोक्तमं व्यगंत्वाती है जैसे इस जम्बुडिएके जीतीपी देव उन्हों कि राजधानी व्यर्गल्यात द्विपममुद्र जानेपर दुमग जमु दिप माना है उन्हीं के अन्दर २५ हजार जीजनके विमार वाली है बडीही मनोहार सर्व रन्नमय है विस्तारभुवनपतिशी माफीक है और जोतीपी देवोंके दिया भी अमंख्याते हैं पार्

(३) राजधानी—जोतीपी देवों कि राजधानीयों की

वड दिया मर्व दियममुद्राँके जीवीपीयोंका दियाममुद्रमें है के जम्युडियके जोतीपीयोंके द्विपालयण मुमुद्रमें है और सार समुद्रके जोतीपीयोंका दिया भी लवणसमुद्रमें है तथा पात ि सपडिवारे जीतीपीपीका दिया कालीदिद समुद्रमें है इमे मास्तिक सर्वे स्थानपर समकता. (४) मनादार जीतीपीटेबीका इन्ट्रॉके पाँच पी

मनामा है । उत्पत्तमना व प्रानिशेषमना (३) धनौता यज 🕝 १८८ सम्बद्धाः । वीध्यमम्बद्धाः यह समा राजधार्न र ५ ८८ ८ राज्य दाइ वर्गनपास्थाका

रहर र ४ ० ८ ८ एए एका है जै

. १ १८६ वर्ष । १ १ वर्ष सहा सन

हे सर्वके मुकटपर सर्थमांडलका चन्ह है एवं नवत्र ग्रह तार उन्ही चन्हद्वारा वह देवता पेच्छाना जाता है.

(=) वैमानका पर्लपणा (६) वैमानका जाडपणा—
एक जोजनका ६१ भाग किने उन्हींसे ५६ भाग चन्द्रका वैमान
पहला है और २= भाग जाडा है यूर्यका वैमान ४= भागका
पहला २४ भागका जाडा है। ग्रहका वैमान दो गाउका पहला
एक गाउका जाडा है। नजनका वैमान एक गाउका पहला
आदा गाउका जाडा है। ताराका वैमान आदा गाउका
पहला पाव गाउका जाडा है सर्व स्फकट रत्नमय वैमान है.

(१०) वैमानवहान-पद्यपि जोनीपीयोंके वैमान आकादाके आधारमें रहेते हैं अधीत वैमानके पहिलाके अगुरुलाषु
प्रयोग है वह आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। नद्यपि देव
प्रयोग है वह आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। नद्यपि देव
प्रयोग है वह आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। नद्यपि देव
प्रयोग है वह आकाशके आधारमें रहे शक्ते हैं। नद्यपि देव
प्रयोग है वह आकाशके आधारमें रहे पहरूषके देवोंकि स्वभाव
के वह रहे वह सम्बद्ध के पहरूपके प्रयोग के स्वभाव
के वह रहे हैं। नद्यापक के पहरूपके देवोंकि स्वभाव
के वह रहे हैं। नद्यापक के पहरूपके प्रयोग के स्वर्ध के स्व

पूर्वादि दिशा पूर्ववत् समस्तनाः (११) मांडलाद्वार-जोतीपीदेव दक्तिणायनसे उत्तरायन गमनागमन करते है उसे मांडला फेहते है अर्थात चलनेति सडकर्ती मांडला केहते है वह मांडलोंके चैत्र ४१० जीवन है

जिम्में ३२० जीजन लवण ममुद्रमें और १८० जीजन जें। द्वीपमें है कुल ४१० जोजन चैत्रमें जोतीपी देवोंका मांडला है

चन्द्रका १५ मांडला है जिस्में १० मांडला लवखसमुद्रमें भी प्र मांडला जंबुडिपमें है एवं द्यपेके १=४ मांडला है जिस्में ११६ लवणसमुद्रमें भौर ६४ मांडला जंबुडिपमें है ब्रहका = मांडल है जिस्में ६ मांडला लवणममुद्रमें २ जंबद्विपमें है जो जोती थीयोंका जंबडियमें मांडला है वह निपेड और निलवेत पर्वेत

१२: गतिद्वार-छ्यं कर्कशेकात अर्थात आसाढ श्र वर्णमाक राज एक महत्रम ३२३१ - इतनी चैत्र चाले नश मक शकात संयात पण अक्ष पुरामाने एक महत्तमे ४३०४

उपर है। चन्द्रमांडल मांडल अन्तर ३५ जोजन उपर हुई। कोर धर्य मोडल माडल अलग दो जोजनका है दिन.

तम चंत्र चाल चले। चल्डमा हह बाहातम एक महुत ्रिक्त्रके _व्यासम्बद्धानसम्बद्धाः १४४० ।

👫 तपद्मित-इक शकातम तापद्मेय २०४२६ । 💥

उनते सर्व ४७२६२३३ जोजन दुरोसे द्रष्टिगोचर होता है मक शंकात तापचेत्र ६२६६२३३ । उनती सर्व २१८३१६५० द्रष्टिगोचर होते हे हति.

(१४) अन्तराहार-धन्तरा दो प्रकारमे होता है व्यापात-किसी पदार्थिक विचमें खोट सावे निर्म्यापात कीसी प्रकारकी बाद न होय जिस्मे प्यापातांपेदा जपन्य २६६ जोजनका अन्तरा है क्योंकी निषेड निलयन्नपर्यतके उपर एंटशिखरपर २'५० जोजनका है उन्होंमें घीतकी घाट चाट जोजन जोतीपीदेव दरा चाल चालते हैं बास्ते २६६ जो उन्कृष्ट १२२४२ जो० वर्षीकि १०००० जो० मेर्स्पर्वत है उन्हीसे चांतर्फ ११२१ जो॰ दरा जोतीपी चाल चलते है १२२४२ जो० अन्तर है, घलोक स्रोर जोतीर्पादेवोंके सन्तर १११ हो . मंडलापेचा अन्तरा मेरपर्वतमे ४४==० जो० अन्दरका मंडलका अन्तर है, ४४३३० जो० बाहारका मंडलके पत्ना है चन्द्र चन्द्रके मंदलके ३५। 🛶 अन्ता है सूर्य स्याने महलाने दो जोजनका पत्तर है। नित्याधानायेन **जध**त्य भन्यका अन्तर उत्कृष्ट दो गाउका सन्तर है हित

 सन्वादार जम्बुद्धपम हो चन्द्र हो सुव लयगमसहम न्यार चरह ग्यार सुव धानाकस्वगहाह्यम ४० चन्द्र १ सुव, कालाहाद्ध समृहम ८० चन्द्र ४० सुव पुष्कः १३२ धर्ष । भागे चन्द्र धर्मकि संख्या भन्नाय-जिस द्विप या सम्रद्रका प्रश्न करे उन्हींके पीच्छेका दिपमें जितना चन्द्र ही उन्हीकों तीनगुणा कर शेप पिच्छलेको सेमल करदेना, जेवे घातकीखराडद्विपमें १२ चन्द्र है उन्हीकों तीनग्रखा करनामे ३६ और पिच्छले जंबुद्धिपका २ लवग्यसमुद्रका ४ एवं ६ को ३६ के साथमें मीलादेनासे ४२ चन्द्र कालोददिसमुद्रमें हुवे ४२ को तीन सुखकर १२६ पिच्छला२−४−१२ एवं**१**= मीलानेस १४४ चन्द्र पुष्करद्विपमें हवा जिस्में बादा मनुष्य-लोकमें होनासे ७२ गीना गया है इसी माफीक सर्व स्थानपर भावना रखने देति. (१६) परिवारद्वार-एक चन्द्र या सूर्यके २०० नवत्र ८८ प्रद ६६२ ७३ कीटाकोड नागेका परिवार है। शंका-नारींकी मल्याका त्रेत्रमान करनेमें इम लंब जोजनका चैत्रमें इतना तारा समाप्रेस हा नहीं शका है ? इसके लिये पूर्वाचार्योंने क टाक टाका एक मजारपने मानी सालम होने है या किसी भाचायान तारका प्रमानको उत्मेदागुलसे सी माना है। तस्व कवलाएका । इसी मार्फाफ सर्व चन्द्र सर्व स्वयंकि मि सम्मन्ता। न क्लब्रहर गरा नाम प्रदेशेतीया चक्रमे द्रव्यी

१९७ इन्द्रद्वार असम्प्याता नंद्र सुधे है वह सबै इन्द्र है पहला दिय कि अपेवा एक चन्द्र इन्द्र दसरा सुधे इन्द्र है।



अहि नारीकी और सर्वेशे महाश्राद्धि चन्द्र देवीं की है। (२४) वैकय-जीतीपी देव वैकयसे जीतीपी देवी देशी बनाके सम्पूरण जम्युद्धिप भर दे और संख्याता जम्युद्धिप मा देन कि जा है एवं चन्द्र मुर्थ सामानीक और देवी में

मप्रवत्ता.

स्थातं दिव समुद्र देखे उ० भी संख्याते दिव समुद्र देखे उपी थाने याने ध्वता। यथो पहली नाक देखे शारण्डा संस्थाते दिपनगढ देखे । १) परिचारणा-तातीपा देवीके परिचारणा प्राः

(२६) अवधिकार-जीतीशी देव अवधिकानमें त^{र में}

वकारको हे यनको अध्यक्त स्वाह स्ववाही कायाकी कार्यी नार्यका एवं अनुष्य है। योह है याचा (बनाया हरते हैं रहे । ११०० वह व अवस्था**र स्था**प • १००न १३ अकत एक् समयम ^{२१}

का प्रकार के इस्तार प्रकार अवस् A CONTRACTOR OF THE PROPERTY AND A SECOND PR



(१) नामदार-वैमानिकदेवीका नाम यथा सीयमेरेक

स्रोतः, इशान देवस्रोक सनन्त्रुमारः महेन्द्र*ः मना*ः संगारः महाराजः भद्रमः भागन् पाणन् भागन् भागन् भागन्देयसाहः। । १२ । नीपीरीय मदे, युनके, युजापे, सुपाल्ये, सुर्शने, प्रयद्यीन, बामीय, सुत्रशिवन्त्रे, यशोधरे, । ह । वापाणुगा

कहा बाला है.

कांक्सपादेश मीलफे मधी ३८ जातका देशोकी वैमानिकदेश

नेपान-विजय, विश्वयन्त्र, जयन्त्र, अग्राजित, वर्षार्थविद्ध, 121

पाचना देवलोक्क नीमरा परवरमें नर लोकानीक बचा नीन

(२) वामाद्वार-संस्थितं ७३० ब्रोबन उठरे ब्रावे तक जोतीलीटिक साते हैं वह 'रेक जीजनके जाइयलामें सवीप

a a अंत्रित संनुषिते उच्छे आने नहीं तक अंतितिहेत्र है

बन्ति चापण्यान कीरनकार राज नाव वन वैद्यानिकत्याका देवाच भारत है हही देवाचनहरूप है। जनाव है उनक है ।

and we some time that the the terminal executions

MENT TO ALLE I IT . LET A BLA TO THE CATE COLD COLOR AND E.

e electricity out that the the the the the

THE BUTAL OF STORE WITHE WEST }



सुमालस, श्रीवत्स, नन्दीवर्तन, कामगमनामार्वेमान मणोगम् श्रीयगम विमल सर्वेतोभद्रः

(१२) चन्ह, (१३)सामानीक, (१४) लोकपाल (४) ताव० (१६) श्रात्मरचकदार.

(1) 111- (11) 111-11 (112)					
इन्द्र.	चन्ह.	साम∘	सो॰	ता०	ञात्म
शकेन्द्र	मृग	⊆8000	ß	३३	३३६०
र्गानेन्द्र	महेप	20000	ષ્ટ	३३	३२००
संनन्दुः •	स्यर	७२०००	ß	३३	२८८०
मरेन्द्र	निंह	50000	ß	३३	२=००
मदिन्द्र	दवस	£0000	ß	३३	२४००
संतकेनद्र	देसका	A0000	ß	३३	२०००
भहागुप्रेन्द्र	ह्म	80000	8	133	1800
सरमेन्द्र	रस्ति	1 ;	ب	33	1 8200
ذنىك :	#4	•		::	E
€ -; ·	1.5 .				

ति । इ.स.च. १४ वर्षा १८०० रहे । इ.स.च. १८०० व्याप्त १४ वर्षा १९११ - १८११ १४ तेष १९१८ - १८८४ १८८४ वर्षा सम्बद्धाः १९५५ वर्षाः विस्ति १९४४ - १८८४ वर्षाः सम्बद्धाः हो स्टब्स्

11,111,111

	* * * *	٠,	41 14	* 11	14
	r		\$ 1 . se 1 * 1 2	4 /2	4
		4 1 4			y
		. ,	1111	? ,,	1
	z + .	* *	1	* ,,	4 4 4 4
	+ t	*	<i>j</i> '''	* ,,	1 1
į	-	*			1
		ı		t e	

The state of the s

सुमाखस, श्रीवत्त, नन्दीवर्तन, कामगमनामार्वमान मखौगम प्रीयगम विमल सर्वतोभद्रः

(१२) चन्ह, (१३)सामानीक, (१४) लोकपाल, (१४) ताव० (१६) आत्मरचकद्वार.

इन्द्र.	चन्ह.	साम०	लो॰	ता॰	आत्म०
शकेन्द्र	मृग	≃8000	8	३३	33600
१ शानेन्द्र	महेप	20000	8	₹₹	३२०००
संनत्सुः०	ग्र्यर	७२० ००	8	३३	२८८००
महेन्द्र	सिंह	90000	8	३३	२=०००
महोन्द्र	यकरा	£0000	8	33	२४००∙
संतकेन्द्र	दंडका	0000 K	8	33	२००००
महाशुक्रेन्द्र	গ্ৰন্থ	80000	8	33	१६०००
महस्रद	हर्म्ना	30000	8	33	82,20
पर्गातन्द्र	मप	•	\ 's	33	=
श्चन्तरद्	गुरु ह		:	1 = 3	3
				<u>.</u>	

[्]रा प्रान्तकार प्रारंतिक सात मात मात मात्रका हे यथा-मात्र त्रम् र , प्रत्न पदल, गत्रप्रनागक त्य वपक प्रत्यक आनकाक द्रा थपन पपने सामानाकदेवास १६७ गणे हे जसे शकेन्द्रक सामानीकदेव हे उन्होस

१२७ ग्रुण करनेसे १०६६८००० देव प्रत्यक श्वनिकाका होते है इसी माफीक सर्व इन्ह्रोंके समक्तना. (१=) परिपदाद्वार-प्रत्यक इन्द्रके तीन तीन प्रकारिक

परिपदा होती है अभितर, मध्यम, बाह्यदेव देखो वैत्रमे					
न्द्र.	व्यमिंतर.	मध्यम.	गाध.	देवी	
2	१२०००	88000	₹€000	शुकेत	

ę 1900 80000 १२००० 38000

E060 80000 १२०००

3 8000 80000 S E0 20

8000 8000 ¥ E000

Ę٥٥ ξ 2000 Sees 6000

y 20 शानेन्द्र 800 90.0 2000 8200 =00

ه و و _ 2203 2000

١9 रोप इन्द्रके ŧ , ,

देवी नहीं। १८ । दवादार शासन्द्रम् आठ भग्न महेपीदेवी है दर्गाम माला मोला हतार देवीका परिवार है

^{१३}⊂० ∨ प्रत्यक देवी शाला शालाहचार रूप वैक्रय कर शक्ती है २०४० २०२० १ दर्जान देवी। एक इन्द्रफे भोगर्मे

आशक्ती है एवं इशानेन्द्रके भी समभना शेप देवलोकमें देवी उत्पन्न होनेका स्थान नहीं है उर्घ्य अञ्चत देवलोकके देवों तकके देवी पेहला दुसरा देवलोकमें रहेती है वह देवोंके भागमें आती है देवीका उर्ध्य आठमा देवलोक तक गमन होता है.

(२०) वंकत्यहार-धाकेन्द्र वृंमानीकदेवी देवतींसे दो बम्बुटिय मरदे क्रसंख्यातेकी रान्ती है एवं सामानीक-सीक-पाल-ताविवनका क्षोर देवी भी समम्प्रतार हशानेन्द्र दो बम्बु-दिप साधिक सपरिवार नथा मनन्त्रमार ४ बम्बु- महेन्द्र ४ साधिक ब्रम्देन्द्र = बम्बु- लांनकेन्द्र काठ साधिक महाशुक्त १६ बम्बु- महम्म १६ साधिक पारान् २२ क्युनेन्द्र २२ साधिक बम्बुटिय वंक्रयमे देवी देव बनावे भग्दे नविक शकी धमन्त्रण बम्बुटिय नहीं को सोदेनेन्द्र हो प्रवार नहीं को

भी अविश्वित यविश्वास सर्वेशत सम्मानं अस्त अस्ति अस्य स्थानं स्यानं स्थानं स्था

(२२) परिचारणादार—सीयमेंद्यान देवलोक के देवी के मन, शब्द, रूप, स्वर्श और कायपरिचारणा यह पांची प्रकृति परिचारणा है तीजा चोषा देवोंके स्परीपरिचारणा विवास करा देवें के स्परीपरिचारणा विवास करा देवें के सम्दर्भरिचारणाई मन देवों के सम्दर्भरिचारणाई मन देश स्वास पादवा देवलोकी देवोंके एक मनपरिचारणाई नव देश स्वास अनुतर वैमानी देवोंके एक मनपरिचारणा है निप्रीपरिचार और अनुतर वैमानी देवोंके परिचारणा निर्देश विमानी देवों विमानी विमान विमान विष्ठा विमान वि

२०० पर्य अनुस्कृत्यतः ३० प्रय प्रज्ञ सस्य अ०० वर्षः व्यव । नापमहरूपः १० ० वर्षः मन्त्रकृष्ठ मेहेन्द्र २२०१ अवस्य । नापमहरूपः मेहेन्द्र २२०१ अवस्य । नापमहरूपः महत्त्व १००० अस्यत्यस्य । प्राप्त अत्य १००० अस्यत्यस्य । प्राप्त अत्य १००० अस्य स्वयं भागि । प्राप्त अत्य स्वयं भागि । प्राप्त अस्य अस्य स्वयं भागि । प्राप्त अस्य अस्य स्वयं भिष्त ।

र्रमात्रह दर राज अब इपाम प्रत्य त्रय करते है.

(२३) पुन्यद्वार-जिनना पृन्य व्यंतरदेव १०० वर्षे द्वय करने हैं हतना पुन्य नागडुमारादि नत्र निकायके दे



४६

(४) इग्यामे	,,	,,	17
(६) दशने	17	"	,,
(७) नपमे	,,	"	,,
(८) माठवा व	र्गस्या	नगुना	
(६) मानवा	**	"	**
(१०) ऋरे	**	**	,,
(११) गाना	"	"	,,
(१२) भोव	**	**	15
(१३) शीव	**		
11 52			,

. १३ राजाक्द - दश सम्यानसूची

स्वत्रम् सात्रम् नतप्रसम्

थोकडा नं. ७

सूत्रश्री जम्बुद्विपप्रज्ञाती.

(खण्डा जीवण)

गाथा—खंडा जीवेण वासा, पन्नेंय कूडें। तित्य सेढीओं।

विज्यं इहं सलिलं। छो,

पिंडए होइ संगहणी ॥ १ ॥

इस लच जोजनके विस्तारवाले जम्मुद्विपकों १०

्रे खंडा-जम्बृहिषका भरतत्त्रंत्र परिमाण कितने द्वारमे वतलाये जावेगे.

्र त्रोषण्-जस्याहण्यः। जोजन **प**रिमाणे कितना संह होते हैं

संह होता है.

(३) वासा-जम्युद्विषमे मनुष्य रेहनेका कितन

वामा है.

(४) पव्यय-जम्बुद्धिपर्वे सास्वता पर्वेत कितने है. (भ) कुडा-जम्युद्विपमें पर्वती उपर कुट है शी कितने हैं. (६) तित्थ-जम्युद्धिपमें माघद्वादि तीर्थ कितने हैं।

(७) सेढी-जम्बुडियमें विद्याधरींकि श्रेणि कड़ी म कितनी है. (=) विजय-महाथिदेहचैत्रमें मनुष्य रहेनेकि विश किसनी है. (६) इह-जम्यद्विपमें प्रमादि द्रह कितने ईं.

(?०) मलिला∽जस्त्रद्विपमें गंगादि नदीयों कित्रीं। उपर बनलाये हुवे १० डारकी शासकार विम्नास्पूर्व

रियाण काले हैं. शहा-तारण्यालोकमं अस्यदिव असंस्थाते ।

परन्तु यहांपर जो हम नियास कर रहे हे बची जम्यदियाँ ध्यास्त्रम करते जर्मादय राज वर्षि चक्र-नेलका पुत्रा कमनी

हमाहः क्षीर पुरू च-८ह धाहार है। यह पूर्व प्रशास एक सर्व बाजनका रहना है। हमी प्राप्ताक हांबलानक भी एक सर्वे



प्रसंगोपात पूर्व पश्चिम लच् जोजनका मानः जोजन परिनायः चेत्रका नामः

र्ने.	चेत्रका नामः	जोजन पारनाय-
,	मेरूपर्वत पहला	१०००० जीत
٠ ا	पूर्व भद्रशाल वन	च् २००° । ′
3	., थाठ विजय	१ ७७०३ ॥
8	,, च्यार वस्कारपर्वन	२००० ।
ų	,, तीन अन्तरनदी	३७५ ॥
Ę	,, सीतामृत्य वन	२६२३ ″
19	पश्चिम भद्रशाल वन	च् र ००० ॥
=	,, चाठ विजय	१७७=२ ॥
â	,, च्यार वस्कार	2000 F
१०	, तीन नदी	ৰ্ডথ ≀

एवं १००० ० जोजन नंप्यणद्वार-एक लच यःजनके विस्वारवाले व पत्तन चातन परिनाण । मान स्वड किया जाप 🕡 र अन्त छ ८ इति इ स्थार योजन परि

.. मीतामुख वन

समाच रस् वट (रय नाय ना अन् १४६६४४५० खंड धेर्यः २०१० रन्त सर्ग २०६० प्राप्त चर पटनाना है इति द्वार्ष (३) वासाहार—इन्हीं लच योजनके विस्तार याला जम्बुहिप में मनुष्प रेहनेका वासचेत्र ७ तथा १० हैं यथा- (१) भरतचेत्र (२) एरभरतचेत्र (३) महाविदहचेत्र इन्हीं तीनों छेत्रमें कर्मभूमि मनुष्य निवास करते हैं छीर (१) हमयय (२) हरखवय (३) हरिवास (४) रम्यक्वास इन्हीं च्यार चेत्रोंमें अकर्मभूमि गुगल मनुष्य निवास करते हैं एवं ७ तथा दश गीना जावे तो पूर्वजों महाविदहचेत्र गीना गया है उन्हींका च्यार विभाग करना (१) पूर्व महाविदह (२) पिथम महाविदह (३) देवकूर (४) उत्तर करू एवं १० छेत्र होता है। विवरण—

लघ योजनके विस्तार वाला जो जम्मृद्धिय है जिन्हों के चांतर्फ एक जगति (फोट) है वह जगति खाट योजन की उची है मृलमे १२ मध्यमे = उपर ४ योजनके विम्तार वाली है गर्व वनरनमय है उन्हीं जगति के कीनारेपर एक गींख जाल धर्यान्-भरोद्याकी लेन खागड़ है वह खादा योजनकी उची पांचमो धनुष कि चोड़ी कोषीमा खीर कांगरा मर्व रन्तमय है।

मुन्दर रूप तथा मीक्तफल की मालावों से मुशोमित हैं मध्य-

भागमे पमवर वैदिका व्याजानेसे दो विभाग हो गये है (१) श्रन्दर का विभाग (२) बाहार का विभाग जो धन्दर का विभाग है उन्हीं के धन्दर धनेक जातिके वृत्त आजानेनी

अन्दरका वनखंड कहा जाते हैं उन्हीं के अन्दर पांच वर्ण के

तुण रत्नमय है पूर्नीद दिशीका मन्द वायु चलनेमें छे गा ३६ रागणी मन और अवलॉको श्रानन्दकारी ध्वनी निकलर्त है उन्हीं बनसंड में और भी छोटी छोटी बाबी ओर पर्वत

द्यागग है वह अनेक खासन पड़े हैं वहाँ व्यंतर देव खोर देवीर्यो बाते हैं पूर्वकृत पुन्यकों सुरापूर्वक भोगवते हैं हगी माफीक

बाहारका बन भी समझना परन्तु बहा नृश नहीं है ।

दुत्रच राम सञ्चानात्र र

🕝 प्रादेशम (राज्य नामका देखाजा है - दःबर्णादेशमे विजयस्य नामको दर-

के बोट है दरशाता उपर नवर्शन आर संपत्रामट छत्रवसर

त्वता और बाट बाट मगनोक रा. दरशताक दाना नके

हो हो चीतरा है उन्होंके उपर प्रायाद तेल्ला चन्डमक कलमें क्रम पान आहे. ए तर इयह इटन्ड असमनोहर रुपशासी

मह पर्वत के च्यारी दिशा पैतालीम पैतालीम हजार

बोजन जानेपर न्यारो दिशा उन्ही जगतिके अन्दर स्थार दरः बाजा बाते हैं वह दरपाजा बाठ योजनके उन्ने न्यार योजन

(३) पधिमादिशमं जयन्तनामा दर॰

(४) उत्तरिद्शमं अप्राजित नामा दर॰ इन्ही चारी दरवाजींके नामके च्यारी देवता एकेक च्योपमाफि स्थितियाले हें उन्हीकी राजधानी झन्य जम्मुद्विपमें । श्राधिक विस्तारवालोको जीवाभिगमयत्र देखना चाहिये।

(ग) भरतचेत्र-जतापर हम बंठे हें इन्हीकों भरतचेत्र केहते हैं। यर चुलहमयन्तपर्वनमें द्विस्पिक तर्फ विजयन — नामे उत्तराके तर्फ पूर्व खार पश्चिम जगतिके बाहार लव-

ाहर है अर्द्धचन्द्रके शाकार है मध्यभागमें वेताडयपर्वत तांग भरतचेत्रका दो विभाग फहाजाते हैं (१) द्विणभरत

न्लहेमान्तपर्वतपा पद्मद्रहमे गंगा छोर सिन्धुनदी उत्तर भरतका तीन विभाग क्रांति हुई तमसगुपत छोर संट द्रमाराज्य है नजे जनार अवंतरों भेदने दिल्लाभानका नीन

and an including the The state of the state of Tear of the American दिस्त को विजयन्त नामका दरवाजा है। वूर्व पिम दोनों संडमें हजार हजार देश मीलाके दिस्त भरतके तीनों सं १६००० देश हैं इसी माफीक उत्तरमत्तमें भि १६००० हैं हैं इसी भरतियमें कालिक हानि द्विहरूप सर्पियी उत्सर्पि मेलिक काल्यक हैं वह देखों. खे प्यारोका धोकडामें।। सर्पियीम १४ तीपैकर १२ वक्तद्रत ह बलदेव ह वासुदेव मतिवासदेव नियमत होते हैं। इति.

(२) एरभरतचेत्र-भरतचेत्रिक माफिक है परन्तु म चेत्रिक मर्यादाकारक चुलहेमबन्तपर्वत है ब्योर एरभरतचेत्र

मर्यादाकारक सीखरीपर्वत है शेप वरावर है इति.

(३) महाविद्रह चेत्र---निषेड और निलयन्त दें पर्रतों के विचम महाविद्रहचेत्र है यह पत्तंक के संस्थान है व सन्तर्कि ३२ विजयम अलहत है। स्वार महाविदेहतेत त्यार किसानसर दिया जायेश तो १४ पूर्व विदेश १२ पति विदेश १२ देश स्था जायेश

जिट्टनक मन्य भागम मेर परंत पुनीपर १०० ता ह विस्तारणाता र उस्ते के पुन परिम होतु तके बार्र परिम हात्रार बोधन का सहस्रात्त्रक ह उन्होंमें होती तके (५ विस्तार सात्त्रा होत्त्र ह अर्थात् पूर्व विद्वस्य १ विजया आर्थ परिम विद्वस्य १ ६ विजय है।

मर पर्यंत १००० जोजनका है उन्होंसे उत्तर द्वि



		४६
	घतुषपीठ	24-5803 14-5843 24-5843 24-5843 24-86-45 24-86-4
	गीया	EUUS+ E BUDO +
	याह	\$=5.4400 \$9.84.43 \$3.85.45 \$3.85
दासमानग	प्रतापस्त	8 7 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
नैयनाम		Estatularia di dinama di dinama di dinama di



निकलने हुव देवक्र उधरक्र पुगलचेत्र और विजयके विवर्षे भर्वादा करनेवाले इस्तिके दन्तके आकार मेरुपर्रनके पाम आपलागे हैं.

(४) वृतलंबताळा पर्वत हेमचय, एरखबय, हरिवास, रम्यर-वास वह ज्यार युगल मतुःपाँका छेत्र है इन्हीके मध्यभागर्ने न्यार एवल वताडचर्यव है.

्यार धृतल् यताडपथत है. (४) वित्तविधितादि निपेउपर्यत्तके पायमें खार मीतानदीके दोनो तटपर चित्र खोर विचित्र दो पर्यत्त है हमी माफिक निलयन्त पर्यत्तके पासमें सीतोदानदीके तटपर जमग समग दो पूर्वत है.

> (१) जम्युद्धिपके मध्यभागमें गिरिराज मेरूपर्वत है. इति-(विचरण)

(१) दो सो (२००) कक्षनिगिरिपर्रन प्रचाम जोडन परितमे १०० जोडन प्रश्तिम उंचा मुनमें ४०० जो० लम्मा चोटा मत्यमे ७५ जो० उपस्ते ४० जोडन जिस्तास्याला है नीतपुर्धी जासेस पर्संद्र मर्च कक्षनमय है।

(२) वीतीम दीच वेता उत्तर न प्रवास गाउ परनीम र प्राचीम जीतन प्रकीम उंचा प्रचाम तो । वस्तारताला है। क्वीस दोनी तसे बाद ४== ते । १६ कला है नीवा ए०५० तो । १२ कला धनुस्सीए १०४४ तो । १६ कला है मन्यक वेता इण्यनिक सन्दर दो दो गुफाबों है (१) तमम गुफा (२) संदेशमागुका वह गुका एव बोलाकि लस्बी ११



(१) मद्रशालवन—मेरूपर्यतके चीतर्फ घरित उपर पूर्ष पश्चिम २२०० भावीस हजार जोजन कोर उपर दिचिय खडाइसो २४० जोजन को है एक वस्तु के से दिक्का जैतर्फ है रमामझाकर अस्टा शोमनिक है। मेरूपर्यन के पूर्व दिशा तर्फ मद्रशालवनमे ४० जोजन जावे तत्र एक मिद्रायवन (जिनमन्दिर) खावे वह ४० जो० लम्बो २४ जो० चोज अ इस ओ० उचा धनेक स्थम पुतलीयों झादिस सुशोमीत है उन्हीं सिद्धायतन के नीन दरवाजा है। यह आठ जोजनका उन्हीं सिद्धायतन के नीन दरवाजा है। यह आठ जोजनका उन्हों सिद्धायतन के नीन दरवाजा है। यह आठ जोजनका

सोमापमान है उन्हीं मिद्धायनन के मध्य माममे एक मिंख पीट चाँतरों के जो लेक्यों चोड ! च्यार जो व जाडों मर्थ रनमय है ! उन्हीं चौतराके उपर एक देवच्छादों (जाडों मर्थ रनमय है ! उन्हीं चौतराके उपर एक देवच्छादों (जाडों जाते हैं उह के जो के लम्या चाडा माधिक झाठ जो उच्चा उच्चेम है उह के जो लम्या चाडा माधिक झाठ जो उच्चा उच्चेम है देग है अन्दर विलोक्य पूजनीक वीधकर मगरान कि श्रीतमाया पद्मामन दिराजमान है सादन भूपके हुउने आदि रहे के है। एक दोलाण एवं प्रधिम एवं उन्हा अवीव क्योर दिशाम च्यार जिल्ला मिन्डर प्रवाद प्रधान निकास में इसाल मिन्डर प्रवाद प्रधान ने मन्दर प्रधान प्रधान ने स्वात के प्रधान की तम जो तब च्यार ने द्वा पुष्कराण अधी आते है प्रधा प्रधान की हमुद्दा हुपुरुराण उच्चे आप के लेक्यों के

जो० पोडी १० जो० उढी पेदिका वनखंड तोरणादि करी संयुक्त है उन्ही च्यार वावीयों के मध्य भागमे इशानेन्द्रका प्रधान प्रासाद (महल्) है वह प्रासाद ५०० जो० उना २५० जो० विस्तारवाला है यावत मपरिवार के श्रामन सहित हैं। एवं अभिकोनमें भी च्यार वावी है उत्पला, गुम्मा निलना उज्वला पूर्ववत परन्त इन्ही वावी के मध्य भागमे शकेन्द्रका प्रामीट् है एवं वायुकोनमें च्यार वादी है लिंगा भिंगनाभा अञ्चना ष्मञ्जनप्रभा-मध्यमे शकेन्द्रका प्रामाद मिंहामन सपरिवार ममभना एव नेबारतकोनमे च्यार वाबी श्रीकन्ता श्रीचन्दा श्रीमहीता श्रीनलीता. मध्यभागमें प्रायाद इशानेन्द्रका समभना बाबी-बाबी के अन्तराम जो श्वनी अमीन है उन्हों के उपर इन्द्रोका प्रामाद है। बदशालानमें आहे विदिशावीमें पाठ हस्तिक्ट है वह १०३ जो। धरतामे २०१ ती । धरतीसे उत्ता हैं मलमे पांचसी है। मुध्यमें ६७० हो। उपर २४० हो किन्तास्थाला है तानगुणा मानेगा पराहे 🐤 पंप्रतरा जिल बन्त, सुहस्ति, अञ्चन ।भार, बुमद, पोलास, विदिस, सेयण गार, इन्ही पाठ प्रदेशर प्रक्रियाम देवता योग द्वानीका मुबन रानमपाही उन्हाउँ प्राप्ता राजपाना पापना प्रपान दिशामे अन्य जम्बाउपमे जानापर यात्र । वजय देववत् समसना भद्रशालवन एव गुन्हा गमावला नुग का शामाय

मान है बहुतमें देवता देवी विद्याधरादि याते है पूर्व संवित मुभ फलको भोगवते हुवे विचर है। (२) नन्दनवन-भद्रशालवनकी संयुमिन ४०० जोजन

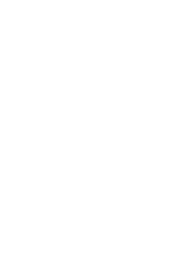
उंचा मेर्यप्रतिपर जाने वहां गोल बलीपाकार नन्दननन बाँग वह पांचमो जो॰ विस्तारवाला है नेरूपर्यतको चौतर्फ पीटा हवा है अर्थात वहांपर मेरूपर्वतकी एक मेखला निकली हुई र्द उन्होंके उपर नन्दनवन हैं। वेदिकावन खंड च्यार जिन-मन्दिर १६ वाजी ४ प्रामाद शक्रेन्द्र इंग्रानेन्ट्रका पूर्वमद्र शालवनात् गमकता श्रीर नन्दनवनमें ६ फुंट है नन्दनवन-कुंट, मेर्रकुंट, निषेडकुट, हैमरान्त० रजीतकुं० रूचिव० सागर-

चित० यस० बलाइंट जिम्में थाठ बूट योजमो पांचया त्री० उंचा बावत आहे। प्रत्यर आह देशका बान है मेघकरा, मेचवर्ताः रुमप्रः हमसाप्रानिकेता स्वरंत्र देशे प्रदेशास्त्राहेतीः बाज्यार इ.स. 7 लाहर इ.स. १००० व्यक्त राष्ट्रकार रेपाल प्रकार है। या राज्या 411 4 4 4 4 4 4 4 4 4 य नम The state of the second

करण । कार्यक्ष प्रवासकार क्षेत्र । अस्ति व्यक्तिमा . र रापन्तर जनाव । त्र तन्त्र १९४३ र <mark>राहेवी</mark> धानन्द रगर १

- (३) सुमानसवन-नन्दनवनके तलासे ६२५०० जोजन
 र्षे जावे तय सुमानस नामका वन आवे । वह पाँचसो जोजन
 विस्तारवाला मेरूपर्वतको चांतर्फ वींट रखा है वेदीकावन
 ह च्यार जिनमन्दिर १६ वावी शक्तेन्द्र इशानेन्द्रका ४
 साद पूर्ववत् समफना यावत् देवतादेवी आते हैं.
- (४) पंडकवन-सुमानसवनमे ३६००० जोजन उर्ध्व वि तव मरूपर्वतके शिखर उपर पंडकवन आता है ४६४ चक्रवाल चुडी आकार मेह्पर्वतकी चलका (१२ जोजन) ों चौतर्फ चीटरला है। वेदीकावन खंड च्यार जिनमन्दिर १६ ावी शकेन्द्र इशानेन्द्रका च्यार प्रासाद पूर्ववत समसना । डकवनके मध्यभागमें मेह्नचुलका है वह ४० जोवनकी र्ची है मूलमें १२ मध्यमें = उपरने ४ जोजन विस्तारवाली साधिक नीनगुशी पर्राद्ध । सर्व वैरूडीय रन्नमय है । एक दिका बनखंडमे बीटी हर है। उपरका तली मिण्जिडित है ध्यभागमे एक मिदायतन एक गाउक लम्बा आदा गाउका . गोडा देशोना गाइक इचा सनेक स्थानकर शोननीक है ्य मार्गिपाट् टेयन्तटा चीर प्रज्ञासन डिनप्रतिसायी यापन एक इचा आदि देवतादेव दरापर आते हे या निराधरमुनि श जाते हैं विलोक्य पुलन के ताथक्कोंका मैपानाक करते हैं.

पडकवनमें न्यार दिशावीमें न्य'र अभिशेष शालावी





२४ म्यूपमकुंट एवं ४= सर्व मीलके ४२४ क्रंट है जिसे व वर्षपरपर्वतीका ४६ शोलावस्कारीका ६४ च्यार गजरता ३० नन्दनवनका = मद्रशालवनका = एवं १६६ क्रंट भ क्रंट ४०० जीजनका उच्चा ४०० जी० मूल पद्गा औष १ २४० जोजन विस्तारवाला है और गजदन्ताके २ नन्दनवर्त १ एवं ३ क्रंट १००० जो० का उच्चा तथा मूलमें १ जो० का पहला शीखरपर ४०० जो० पहल है एवं १६६

र्चीतीम वैताद्यका २०६ इंट २४ माउका उचा हे मृत पड्ना तथा शीखर पर १२॥ गाउका पहुला है। उन पीटका – मामली पीटका – थोर खुपमइंट २४ एवं ४० है भाट जोजनका उचा थाट जोजनका मृतमे पहुला है शीखर पर अंजका पहुला है एवं इल ५२४ इंट ममस्य

उपर जो ४२४ हुँट करें है इन्होंमें ७६ हुँट माँ जिनमेदिर है जोन ४४६ हुँट पर देवना और देवीयोजा ५-है प्या-छे वर्षप्रवर्षों पर छे जिन मन्दिर होलानक परेतो पर १६ जिनमन्दिर । न्यार गजनला पर च्यार जिन मन्दिर माट देवरू माट उनरहर सीर बीलीम बेनाइपर्यों ११ १८ विज्यान्दिर एव इस ७६ विज्यान्दिर है इन्हों होन्सी नुद्रान्त्रन्त स्वरूपन्त्रन र मुमालस्त्रनम् र वृद्या की

स्कार सर्वेत र १८८१ का बेट दार संदेशी बे**स** से

दे १६ मीलाके ४५ जिनमन्दिर माम्यता है परिमाण — दे पर्पपर जितस्कार स्थार गलदन्ता स्थार भट्टशाल स्थार नन्दनवन तार सुमानस्थन स्थार पेटसबन एवं ४२ स्थानके जिनमन्दिर सास पत्ताम लो॰ लग्बा पत्तिय पत्तिम लो॰ पोटा छतीस तीम लो॰ उसा छनेन स्थाम पुनलीया तार खादिसे सम्छा शोभिन सर्व क्लोमच है उन्हीं जिनमन्दिरीके तीन गीन रवाला है प्रत्यन दुखाला खाठ जोजनका उसा स्थार लो॰

रवाज्ञा है प्रत्यक द्रवाजा थाठ जोजनका उचा च्यार जो॰
र्ला नीस्त स्थाभ थादिने थान्द्रा मनोहर है.
चौतीन वैनाट्य थाठ देवहरू थाठ उचरहरूके पीठका
त्या जम्बुट्टका एक मामलीवृक्षका एक थाँर मेम्बुटुकाका एक
दे ४३ जिनमन्दिर एक कोवका लम्बा थादा कोवका पहला
१४४० पनुषका उंचा गर्व स्तम्य है इन्ही नर्व मिद्धायतनों
वर्षात्र जिनमन्दिरोंमें बीलोवय प्जनिक नीर्थकरोंकी शान्तमुद्रा
साननमय प्रियों है उन्होंकी मेवाभक्ति अर्चनादि देवदेवी
विद्यायन करते है.

शेष ७०६ कुंट तथा २०० कश्चर्नार्गार ४ पृतलपैताट्य ४ विनिर्दाचन जमगममग एवं मब ६४७म्थानपर देवीदेवनोंका आवास अवन ते हाँन

६ तीर्थकार जम्बुक्षिपम तीय । हे बह लीकिक साम्बन्ध तीर्थ है जिस समय सक्कबरत खड साधनेकी जीते हैं

है या तीर्थकरोंका जन्माभिशेषके लिये उन्ही तीयोंका उल र्त्रापिध ब्रादि देव लाते हैं इत्यादि वह तीर्थका नाम-मागय

तीर्थ होनासे १०२ तीर्थ है.

गत करते है

तत्र वहांपर ठेरते है यह तीर्थाध्यक्षायक देवांका अष्टमतप करते

वरदाम और प्रभाम एवं चक्रवरतिक ३४ विजयमें तीन तीन

(७) श्रेणी~जम्बुद्धिपमें श्रेणी १३६ है यथा वताङ्य गिरि २४ जोजनका घरतिमें उंचा है उन्हीं पर्वतके उप धरातिमें १० जोजन उपर जाये तब विद्याधरोंकी २ श्रेणि (१) दिचण श्रेणि जिम्में ४० नगर है (२) उत्तर श्रेणि जिस्में ६० नगर आने हैं उन्हीं विद्यायरोंकी श्रेगिमें दश दश जीवन उंचा जाने तब धामियोग देवोंकी दो दो श्रेशि आति है (१) दिविण श्रेणि (२) उत्तर श्रेणि वहांपर व्यंतरदेवता पूर्व की हुवे सुकृतके फल भौगवते हैं एवं ३४ बेताल्यपर स्याः स्या श्रीण है सर्व मीलके १३६ श्रेमि होती ह डॉन.

(द) विजयद्वार-सम्बद्धिमे ३८ शित्रप्तर जनापर सके वन दे बाइको विनय करते हे यथान हे बाइम एक इब

महाजिदेहक्षेत्र एक हे प्रस्तु उन्हाम ३२ विजय अली अलग दे जिस्म १६ जिजय सेरूपयेतमे पूर्वकी तफे है औं १६ विजय मेरपर्वतमे पश्चिमिक तक्षेत्रं जो पूर्व महानिदेवमें १६

विद्यह उन्होंके विचमें सीता नाम नदी है चास्ते सीतानदिक उत्तर वटनर = विजय और दिन्स तटपर झाठ विजय है र्मी नार्शक पश्चिम महाविटेहमें सीतीदा नदीके दोनों तटपर आठ

र्नी नाकीक पश्चिम महाविदेहमें सी भाउ विजय है एवं विदेहचेत्रमें र	तोदा नदाक पाणा ३२ विजय है उन	ीका नाम-
	पश्चिम विदेष	र्रातोदानदी.
उत्तर तट. दिए तट.	उत्तर तटः	दाविस तट
१ कस्त विजय चन्छ विजय	पन्न । वसप	विप्रा विज्ञ सुविप्रा ग
२ मुक्तन्तः मुबन्तः	सुपम "	महाविष्रा •

७ दुस्त्रमः । समाप्तः ।

, दण्डनार भागाः । १८५१ः

अपने कार्य है पूर्व 🕬

चातीस तमस गुफा २४ संडप्रमागुफा २४ राजधानी २४ नगरीमों २४ कृतमाली देव २४ नटमाली देव २४ व्ययमङ्ग २४ गंगानदी २४ सिन्धुनदी यह सर्व पदार्थ सास्वता है शेप नाम देखो जन्मुदिश प्रजातीस इति.

(६) द्रवहार-जम्बुद्विषके अन्दर शोला द्रव है यथा पमद्रव, मदापमद्रव, सीगीच्छ्रद्रव, केसरीद्रव, मदापुदरिकद्रव, पुउरिकद्रव, यब छ द्रव छ वर्षभर पर्वतीके उपर व आंत पांच द्रव देवकुरू सुगल चेक्नके अन्दर व निपेडद्रव, देवकुरुद्रव, दर्यद्रव, सलसुद्रव, विद्युत्तमद्रव नथा पांच द्रव उत्तरहरू सुगल केयके अन्दर व निलास्त्रहर, उत्तरहरूद्रव, चन्द्रद्रव एत्यरत द्रव मालयन्त्रह एवं सर्व १६ वट अनुद्विषके अन्दर वै।

(१) पमद्रह—चुलहेमयन्त पर्यत १०५२-१२ पहुल हैं जिन्होंका मण्य भागमे पमद्रह हैं वह एवं पक्षम एक हज़ार जोजनको, लम्बो ब्यार उत्तर दक्षिणमें ४०० जोजनको चोडो दश जोजनको उदो पिरपूर्ण निमेल पाणीम भग हवा है वह उत्तर कमके कमलो कर भण्छ। शांगिनक है। कमलोका विकास

द्रहके मध्य भागमे श्रीदेवीका पटा कमल है उन्हीं के चौतक भेडारी देवीका १०० कमल है, न्यार कमल महत्तरीक देवीयोंका है, मान कमल श्रीदेवीके द्यानिकाक अधिपति देवोंका



एक मिष्णिंट चौतरा है ४०० घतुप लम्बा २५० धतुप चौता उन्हीं चौतरा उपर एक देवश्यया है यह वर्षन करनेयोग हैं यावन वहांपर श्रीदेवी अपने देवदेयोंके साथ पूर्वउपार्तित श्रूपे फलोकों भोगवती हुई यानन्दमें रेहती है। यह पमद्रहके वाहार एक पमवेदिका ब्यार एक वनसंद कर बीटा दूवा है येशा-चिकार नदीदारमें लिखेंग इसी भाकीक सीटसीयचेवपर उंटें रेकद्रह भी समक्रना परन्तु उन्होंके देवी लिच्छिदेवीका अवन या कसल है इसी माकीक देवकूक उत्तरहकु गुगल चेत्रोम रे॰ द्रहक्षा भी वर्षन समक्रना परन्तु उन्ही द्रहोंके वाहार बेदिका

माफीक समस्ता । १२ ।

११० महापग्रहर भरोभार तथा तिके उपर मध्यभागमें

---- जो । अस्य अस्य १० जो । बोडा दश जो० उडा
महापम मामका हर है उन्होपर र नाम। देवीका कमल तथा
भुवन है परन्तु कमलका मान हुनुगा समस्ता हमी माफीक

दो दो है कारण उन्ही द्रहोमें सीता श्रीर मीतोदानदी बेंदि कार्को भेदके द्रहमें श्राति है श्रीर वेदिकार्को भेदके द्रहर्ते निकलती है वाले वेदिका दो दो है श्रेप श्रिपकार पण्टह

भुवन ह परन्तु कसलाक मार्च हुनुता समस्ता इसी माफिकि रूपिपवर्गर महायुंटरिकनामा इह है परन्तु उन्हीपर पुद्धि देवीका कमल और सुउन हैं देवी साफीक समस्तना । १४ ।







खुलहेमबन्तपर्यतका पमद्रहके पश्चिम तर्फसे निकली सिंधुप्रमा-इंडमें होके पूर्ववत् १४००० नदीयाँका परिवारसे पश्चिक लवणसम्रद्रमें परन्तु वहां तससप्रमागुकाके निचासे तथा इंडका नाम सिंधुईंड तथा सिंधुदेशीका धुवन समक्तना एवं दोनीं नदीयाँका परिवार २८००० नदीयाँ है। वह पर्यवर्गर निक लती आदा जोजनिक उंडी और ६। जोजनिक विस्ताराली थी पीछे प्रमुख दहने वहते जहां लवणसमुद्रमें मीली है वहांपर पांच गाउकी उंडी और ६। जो० विस्तारवाली हृइ थी

नामकी नदी नीकलके रोहीतप्रमासनामा कुंडमें पडती है यर नदी हेमवय युगल्लेवमें गड़ है श्रविकार गंगानदीके मार्कीय परन्तु नीकलनी एक गाउकी उदी १२॥ जोजनका दिस्तार वार्नी है नया गेहीतप्रभामकुंडका विस्तार दुगुख १२० जोज नका ममस्ता जहां नवगमसम्ब रामे १० गाउकी उदे १२० जोजन विस्तार साली है दगी मार्कीक महादेयजनावदील मरा १०३२में गेरी कर नदर नेमच्य प्रमालन से बाह है परिमार सब गेरता करणा करणा देशी वर्गावीक ६ स्००० वर्ग

ुर्योप प्रियोग सम्मन्त त्या ३६ ००

चुलहेमवन्तपर्वतके पद्मद्रहके उत्तरके तोरणसे रोही^त

प्रश्रीम प्रत्या २० मह प्रवहरका उत्तरका **तोरण** इरिक्तनानदी श्रीकार पुणवानेत्रम ग्रह है प**ह निकलगी**



निलयन्तपर्वतके केशारीद्रहके उत्तरके तोरणसे नरकता श्रीर रुपीपर्वतके महापुंडरिकद्रहके दिख्यका तोरणसे नारी कन्ता यह दोनों नदीयों स्म्यक्तास ग्रुगलक्षेत्रमें कुंड ^{झीर} देवीका नाम नदी माफीक विस्तार परिवार देखो यंत्रसँ.

रुपीपर्वतपर महापुंडििकद्रहके उत्तरके नौरखसे रुपड्डन नदी और सिखरीपर्वतपर पुंडरिकद्रहका दिचलका तारखने द्यवर्णदुलानदी यह दोनों नदी एरखवय ग्रुगलचेत्रमें गई है परिवासदि देखो यंत्रसे.

सिरारीपर्यतपर पुंडरिकद्रहके पूर्व और पश्चिम तौरणसे रता रक्तवंति यह दो नदीयों एरवरनचेत्रमें गंगा मिन्धु^{रह} चौदा चौदा इजार नदीयोंके परिवारमे लबगममद्रमें प्रवेर कीया है नदी के माफीक कुडका या देवीयोका नाम समस्त इट वा च्यन हा स्थितार गगाउँदी मार्पाह है

केलक सकत सरिचा ें । नेव उ. -प्रकारत उटा - या उ. -मण्डम प्रदेश होती उ

निक्षी - निक्न र्यास्त्रकार प्रकार सम्बद्धन प्रवेश होतो विस्त



एवं सर्व मीली १४४६००० नदीयाँ परिवारकी हैं। तथा यंत्रमें १४-६४ मीलके ७= मृल नदीयाँ हुई. महाविदेदचेत्रके च्यार विमायमें ३२ चक्रवरति

विजय है जिस्सा २= अन्तरों में १६ तो वस्तारवर्गे पेरते जिख आये हैं और १२ अन्तरों मारह अन्तर नरी है यथा-गृह्वनित, द्रह्वनित, पंकवन्ति, तंतवला, मंतवला, उममज्जा, चीरोदा, सिंह्सोता, अन्तोवहित, उपिमालित, फेनमालि, गंमीरमालित यह १२ नदीयों प्रत्यक नदी १२४ जोजन और हो कलाकि लम्बी है एवं सर्व मीलके १४४६०६० नदीयों कलाकि लम्बी है एवं सर्व मीलके १४४६०६० नदीयों कसाकि सम्बी है एवं सर्व मीलके १४४६०६० नदीयों सम्बद्धिय में है यह थोकडा सामान्य बुद्धिवाला सुल्युहेंह समफ शके वास्ते संचेष्य हैं।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सद्यम् ॥





२००० जोजन उदा है अयीन् जम्बुदिय कि जगतिमे बार्ता पचखचे पचाखचे हजार जोजन जानेपर चीवर्फ दश दश हव जोजन लवयसमुद्र एक हजार जोजनका उदा है वहासे पवर्ष पचखाये हजार जोजन जानेपर चात्रकि खंड दिए आता है लवनासमुद्रके च्यारों दिशामे च्यार दरवाजा है वह जन्तुरि माफीक समस्तना।

स्वमास्त्रिक स्थारा (दर्शामा स्थार प्रशाना कर समझना ।
स्वयत्त्रसङ्क मध्यमाग जो १००० जोजनका ग्रे
चक्राकार १००० जोजनके उदस पाखी ई उन्हीं सक अपुत्रके मध्यमागमे स्थार पाताल कलशा ई (१) प्रैदिश बहवा हुए पातालकलग्री (२) देविचादिशामे केतृत्तामा पा कलशो (३) प्रिथमिदशामे जेषु (४) उत्तरिशामें इसर पा कलशो। यह स्थागे कलसा लच लच जोजन परिमाच सम् मध्यमागमे लच जोजन विस्तारताला ई कलशोका अपीम

तथा उपरक्षा मुग्द देग दूश इवार वीजनका है उपर किटी एक हवार वीवन कि बार्डा है कलशांका मुख्यर हवार है... वीवन लगण समुद्रका पाणी है। एकेक कलशांके विचर्य द्यानर २१२२६५ वीवनका है उन्हीं प्रत्यक क्षानगांमें १६२१ हार कलशा है रहारा अन्तरांमें ७८८४ छोटे कलशा है

च्या पक्क बस्तरम कलगाको नव नव थीग ई उर्दे

श्रेरिम कलगा २०३ २०६-२१४ २०१-२१६-२१०

२२१-२०४-२०४ वलमा ई स्परि











जोजन । पूर्व पश्चिम एक हजार जोजनका पहला मूलमें ^{एह} इजार जोजन चोडा यावत् सीरसपर पांचसो जोजन परिगः स्पाले दो इसुकार पर्वत बाजानेसे घातकिखंडके दो विमाग हो गये हैं (१) पूर्व घातकिखंड (२) पश्चिम घातकिलंड

इन्ही दोनों विभागके अन्दर दो मेहपर्वत है यह मेहपर्वत एक हजार जोजन घरतीमें उड़ा और =४००० जोजन घरतीमें उचा एवं =५००० जोजनका प्रत्यक्त मेह है। वह मेहपर्वत न्यार वन करके अलंकत है दूसरे पर्वत या वासा आदि हों कुम्युदिश्य दूगुया मममना परन्तु चेत्रका लग्ना चोड़ा अपिक है और पातिकरंड दिएमें १२ चन्द्र और १२ मर्थ सपरिवार है शेपाधिकार अड़ाइ दिपका मंत्रमें लिखा जावेगा इति। पातिकरंड दिपके चीनके गोज बलीयाकार =०००० जोजनके विम्नाग्याना कालोटिंद नामका मधुद्र है वह चीनके मार लव जीजनक पत्रना है =००० प्र वोजन गाधिक पर्याई है एक प्रधानक सेंटका एक उनसंड च्या उटकांज और दरबाद दरवाने अन्तर २०००० जोठ के वह मधुर्

दनप्प नोचनका उटा ह बन्छा चलमे परिवृक्त सगाह्या । कालोटादि समुद्रके चीतक गोल वर्लायाकार पू^{र्}की नामका दिप दे वह १६०००० जोजनका चीनके विस्तरिः



मपुर सर्वात अदाहडिए दोष ममुद्रको समय चेत्रभी कहानते है कारन मिड होता है मो इन्ही समय चेत्रमे ही होता है इन्ही अदाहडियके चेत्रका परिमाण:—
१ जम्युदिप पूर्वपश्चिम मीलके १ लच गो॰
२ लागणसपुद्र ,, ,, ध साचा प्रो०
३ पातकियांड ,, ,, ,, ⊏ लाग को०
४ कालोदद्विगम्० १६ सच् प्रो॰
^थ पुरुषदेदिय ,, ,, ,, १६ लख मो∘
एरं प्रजानकार <u>-सन्तर्भक-</u> भवादिक एए जन शेर्डि

पर मनुष्यलोक-समयसेय-भदार्ग्डिय ४४ स्व मार्ग नका है जिन्होंकि पादि १४२३०२४८ जोजन मार्थिके पदार्ग्डियमें जो मीयस बन्तार्थके से संस्कृत बन्नार्थक

जाता है।	414	पदाय ह	मा पत्रक	94 A.320v
गरावं	ा बम्ब	डिपमे [ं] (' पानकि	te. oll Ter
ब र्गात	,			1 3

पदार्व	¹² बम्बुडियमे	^१ (१) पानकिमंड-	oll Leg
बम्पान	,	1	ş
TTITT4	į.	١ ,,	12

20-0



चन्द्र पूर्व यंत्रमें लिखते हैं जीतना चन्द्र है इतना ही स्वी
एकेक चन्द्र सर्वेका परिवारमे २८ नचत्र ८८ प्रह १९६७।
कोडा कोड नारीका परिवार समक लेना।
श्रद्धदिपके बाहार नोतीपीयों की चाल नहीं है ^{मनु}
ध्यक्त जनम मृत्यु नहीं गाज विज वर्षाद बादर अपि भी

यक्ताजनम सृत्युनही साजवित यर्पाद सादर अधि मी नहीं हैं।

नहीं हैं।		
नाम	विम्तारपर्गा	पन्द्र प्रं
जम्बुदिय	१ सच जोजन	3
स्वणममृद्र	٦,,,	¥

	_	
नाम	विम्तारपणी	पन्द्रप्रां
जम्बुद्धिय	१ सच जोजन	3
सदणममूद्र	2 ,, ,,	¥
घातकिलंड	1 8 1	१२

कालाङदिसमूह

प्रकादिय T-4.F4 73

115 27 127

41 :1

44:

47;

23

\$84

853 ? \$ = 9

1035

\$= 4=3

44z**4**8

हुत द्विप	1 १०२४ ,, ,,	१८८२८८
। समृद	₹०४= ., "	७७६४२४
हु दिप	४०६६ ,, ,,	२६६११२०
भ सम ् ड	=१६२ ,, ,,	६०⊏४६३२

इति सात द्विप सात समृद्र ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सद्यम् ॥

धोकडा नम्बर ३

(मृत्र धी जीवाभिगम प्र०३)

at the state of

Police of the control of the control

गिरि और उत्तरदिशामें उत्तराञ्चनगिरि है प्रत्यक सञ्जनिर्णः १००० जो । घरतिमें =४००० जो । घरतिसे उंचा है मून्यें साधिक दश हजार जो॰ घरतिपर दश हजार कोजन की सीखरपर एक इजार जोजनके विस्तारवाला है। मार्थिक तीनगुणी परदि है सर्व श्रीरष्ट (श्याम) रत्नमय है। प्रत्यक सञ्जनगिरिके सीएरका तलाश्ममादलका वर माफीक साक है। मीखरके वलाका मध्यभागमें एक मिड मतन व्यर्थात् जिनमन्दिर है वह १०० जो॰ लम्बो ५० जी नोटो ७२ जो॰ उंचा अच्छा सुन्दर रमणिय है उन्ही जिन मन्दिरके च्यारी दिशामें च्यार दरवाजा है वह १६ जी उंचा = जो॰ पहला च्यारो दिशाहे दरवाजीके झागे च्या मुखमंडप है यह १०० जो० सम्बा ५० जो० चोडा र जोजन साधिक उंचा है। च्यार दरयाजा १६ जो॰ उंचा लो व नोडा उन्ही मुखमंडपके आगे ब्रेग्नापथरमंडप है बह १० बो॰ नम्बा 🕡 मार्गोदा माधिक र६ नोजन उँगा इत्याहः यन्दरः राजन (वस्तारवानी माणिविक्र चीन्गी रामाचारत । वस्तार राह्यस्य तथा प्रचन्ना मह इत्यार प्रत्ये अस्मान पदार्थमान प्रशासनी शामा इन्द्र ११ र - तर १ 🕝 प्रचण ११ महत्वह सामे 🤻 स्य इर १९५५ राज्य वर्षे विकासीमी **है उनी** रक्षण १३ व व्यापन माराज्य र इन्हाह उपा ह्य

् टिन प्रतिमापणासन शान्तमुद्रा स्पृभ सन्मुख मुख किया हुने विगतकान है। उन्हें रपुभसे आगे एक मणिपिठ चानरों है पर माट जीजनके विश्वारयाला उन्होंक उपर चन्य बृख व्याट । बोजनको उची है धर्मन करने थोग्य है उन्होंके प्रांगे प्योर मी ब्राट खोडनका मींगुपिट चीतारा है। उन्होंके उपर महेन्द्र भाग ६५ जोजनकी उची धोर भी छोटी छोटी विजय विज-याँन ध्वज है उन्होंने आसे नन्दा पुष्करणी पार्व ६०० जी लाही ६० और पोर्श १० जोर दरी चानेवा वामल वागी-दीया मीरण पामर एवं १वज वर मोशिनक है। उसी मार्ट वे व्यामे दिया प्यार यनगर है । यह मृत सिटायतनके एक दिया के पदार्थ पता है क्ये हैं। इसारी दियांसे मासबदा है क दर्प दिलापे वनारहमें हर .. मान मानन धरन भारतमा क्या स पर १५०१ ए । एउट्टा धार होस्याना ter room .

....



च्यार अञ्जनिगिर के अन्तरामे च्यार रितगीरापर्वत है

वह अद्याद्यों बोबन धरितमे १००० बॉ॰ उचा सर्व स्थान
रद्यार बोबन पहला पर्लोक संस्थान है प्रत्यक रितगीरापर्वत
के च्यागे दिशाम च्यार च्यार राबधानीयों एवं १६ राबधानी
है वह प्रत्यक राबधानी १००००० बो॰ के विस्तारवाली है

वह प्रत्यक राबधानी १००००० बो॰ के विस्तारवाली है

वृह्हिर२७।३।१२=।१३॥-१-१-१-६ आफोरी परिद्ध है

पावत् राबधानीका वर्णन माफीक समभना विस्मे इशान
कार नेप्यत्यकोन रितगीराके = राबधानीयों तो शकेन्द्र के

अपनेहीपर्योक्ति है धोर धान धोर धार वायुकोन रितगीराके =

गवधानीयों इशानेन्द्र के धान प्रतिक्री है वन्दीधर दिपका सर्व पदार्थ
कारी है वन वह पर ठेरती है धवन नंदीधर दिपका सर्व पदार्थ
करते हैं।

४ अञ्चनगिरिपर्वत श्रञ्जनरन्नमय.

^{१६} द्रिपमुखापवेन अवरत्नमयः

३३ वनक गिरियवन कनकमय

४६ जिल्लास्टिक सर्वक नोस्य

६६४६ सादन मान्द्रशम । तनव तमाप्रे

त्रे-च सुग्रमद्यः १० मान्द्राकः द्रागालेया

१ = प्रेंदर प्रश्नाद

5 (= 1 V 4













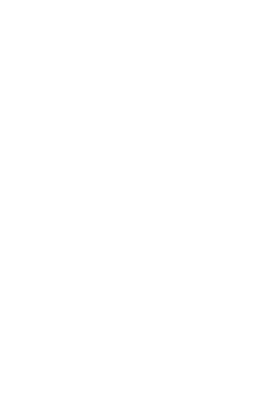














धाया हं कारण जातिस्मरणादि ज्ञानमें जेले मृगापुत्रकुमार या भटावलकुमारादि धार कितनेक ज्ञानवन्तोंके पाससे सुननेसे जानते हैं जेसे मेपकुमार मगवान के पास ध्रपना भव सुननेमें काना की में पूर्वभवमें हम्नी था हत्यादि।

झानीपुरुषोंने श्रवण करनेसे पिशेष झान भी होसके हैं नेप्यट्टीसे बतलाये जाय नो सम्यक्तव प्राप्तीके मौक्त्य च्यार बाह है।

(१) घात्मवाद — घात्मा घतत्व घरिष घम्ति चयं च यमल मुद्रानिर्मल मानदर्भन घात्मय मह घदानन्द धर्मण्यात प्रदेशमय सम्बत् ह निथय नयसे घर्यती घम्नः घड एपयाममय ह हनीय भाग्यकार्भने पाच कृत पार्टा-या





थोकडा नं. ५

(सृत्रश्री सृयगडायांगजी श्रु० २ अ०३)

जीवागमा महादानन्य निजमुणभुक्ता गदा धनाहासेक र यह निध्य नयका यहन है। सीर जीवके धनादि कान्से हमीका भेगाम होनामें भिन्न भिन्न योनिमें नया नया उन्हें धारम काने हुँच पूहलोंका प्याहार करना है यह प्यवहार नरक वस्त है। स्ववहार नयमें जीव सामहेष की प्रहृति करने हुँच के प्रसद्ध्य भी होता है। उनी सनीका पान सहनाने हुँच सूत साहत्य कामात भी परवा हिज्ञाहित होंक हुँच राज्

र विकास के के किया है। जन्म

غالم ستسرك كراياه

110

(२) मूलपीया—मूलमे बीज जेसे कन्दा मूलाके (३) पोरगीया—गाठ गाठमे बीज रुथुवादिमे

(४) पारवाया---गाठ गाठम याज इशुव्यादम (४) स्तन्धवीया---गह् चीखादिमे

इन्ही बनास्पतिकायके उत्पक्त होनेका स्थान दोग ई (१) स्थलमे (२) जलमे जिस्मेपेस्तर स्थलमे उत्पन्न होने ह उन्हीका अधिकार लिया जात ई.

प्रश्वीयोनिया बुख प्रश्वीम उत्यस होता है तब पेहना पुर्श्वीकायके अरायपुर्श्वोक्ता झाहार से के अपना शरीर पत्यता है पादमे छे काया के जीवींके सुरेशतों पुर्वासीका आहार लेते हैं वह आहार अपने शरीरपणे परिण्याने हूंव शरीरका वर्ष पाय रम स्पर्श नाना प्रकारका होने हैं यह प्रथम अज्ञार

वर्ण गरुप रम स्पर्श नाना प्रकारका होते दे यह प्रथम श्रन्ता पक हुवे । १ । पुरुषियोजिया पृक्ष में उन उत्पन्न होता दे नव पेहले

हर्यायानया हुआ में हुन हर्यायाना है तब पहले उत्पक्ष स्थानक संस्थान बाहर ने के अपना अर्थाय प्रथमित अरक्ष हें कार्याक नेकार के प्रथम जाराक रमा गत्य राज्याता नेका करण स्थान के प्रथम

१च पोनियावृद्यमें दश घोल उत्पन्न होते हैं यथा-मूल, कर, क्क्रप, क्वमा, साखा, प्रतिसाखा, पत्र, पुष्प, फल, क्षेत्र, पद्दि वोल उत्पन्न होते पेहले व्यपने स्थानके स्निम्बका स्थात लेके व्यपना शारीर बन्धता है बादमें हे कायाके विवेका मुक्तांका पुरुलोंका व्याहार ले व्यपने शारीरका परी, क्य, रम, रपर्श नानाप्रकारके बनाने हैं। ४।

पृथ्वी पोनिया पृष्में यात्रीम (एक जातिका पृष्में दूगरी जातिका पृष्में दूगरी जातिका पृष्में उपम होता है उन्होंको यात्रीम फेहते हैं) उपम होता है । १ वर्ष पोनियावृष्में यात्रीम उत्पन्न होता है । १ वर्षोत्तया वर्षोत्तर यात्रीम मृत्यादि । १ वर्षोत्त उत्पन्न होता है । १ । १ वर्षोत्तया यात्रीम मृत्यादि । १ वर्षोत्त उत्पन्न होता है । १ । १ वर्षोत्त वर्षोत्तर वर



ेरी पृष्या जन्म होता है बादमें मानाके दृक्ष सर्पाका प्र्याहार रेटल हैं पीर नाना प्रकारने प्रसम्पावरीके धारीरके छुटलीका रेटल यह के सपने छाटीरका यक्तमध्य रस रप्या नाना प्रकारिक प्रतात है। एक ।

स्थि सामित्रः जानुसार जीतः धरन्तु जनमन्ति सामित्रः जाताम केर्ते हैं १ कर्ष १ सम्मे रोज्य भरत् जनसन्ति माणावतः १ जात्यि सामार केर्दे १ कर्षा १ स्वे १ तालम्ब भारत्यकी माणील २ ० १ स्थि त्रस्ति । सर्व मारतः जनसन्ति राम र मास्तु १ छ ४ सन्तर्भ रति । कर्षा १ सर्व श्वलाहर् भी सर्व कर्षा १ २ ४ ।

्रिक्षित् कार्याः अपि व स्वतिष्ठाः प्रीकः जनसम्बद्धिः प्र इत्यास्य कार्यास्य जनस्य स्थासम्बद्धिः स्थापः क्रियास्य स्थापः स्थापः स्वतिष्ठ

 $(\mathbf{r}+\mathbf{r})^{-1}(\mathbf{r}+\mathbf{r})=(\mathbf{r}+\mathbf{r})^{-1}=(\mathbf{r}+\mathbf{r})^{-1}$

बेमें पृथ्वी योनियानुवमे २१ अलापक हो है स्मी माफीक उदक (पार्गी) योनियाबुलमें भी २१ भलाउक हेना परन्तु इक्तीममा बलापकमें भूदकोडाके म्यान उत्पतारि कमल समम्बना एवं ४२ श्रलापक हुवे। पृथ्वी योनियात्रुधमें असकाय उत्पन्न होती है । 👫

वृक्त योनियावृच्चमें श्रमकाय उत्पन्न होती है। २। वृक्त योनि-यात्रवर्मे मुलादिया दश बील उत्पन्न होता है। ३। एवं श्रञ्जोराका ३, तुगका ३, श्रापदीका ३, हरिकायका ३, भूर-फोडाका १ एवं १६ इमी माफीक उटक योनियाका भी १६

मलापक मीलाके ३२ श्रलापक हुवे । वेद मोहनिय कर्मोद्य मनुष्यकों मधन नंजा उत्पन्न होती है तब सि के साथ मधन कमें सेवन करने है उन्हीं समय माताका गाँउ पितार। शुक्त के साथमें योग होते हैं उन्हेंकि

श्चन्द्रर त्रीय उत्पन्न होने हैं यह खिवेट पुरुष्येंद्र नर्ष्मक्येर उत्पन्न होने ही पेहला सलाका गेट पनका शकका आहार लेता है बढ़में माता कि संह यर ३०० सार्टी के साथ सबस्य बीनाग सार् जा ना राहरा - ... - ज्ञाने प्रतीका एक विकास के का अध्यक्ष न र . . र न प्राप्ती की

उत्पन्न हुवे। ब्रह्म अनियोनिया अनिमे अनि उत्पन्न होती हैं। ६०। अनियो योनिया अनिमें, त्रसम्थावर जीव उत्पन्न

त्रसंस्थावर बीचेंका सचित श्रतिस वायुक्तप उत्पन्न होती है। ६२ । त्रसंस्थावर योनिया वायुक्तपमें वायु-काय उत्पन्न होती है। ६३ । वायु योनियावायुमें वायुक्तप उत्पन्न होती है। ६४ । वायु योनियावायुक्तयमें त्रसंस्थावर उत्पन्न होता है। ६५ ।

पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है। २७। एथ्वी योनियाप्रध्यीतें पृथ्वीकाय उत्पन्न होती है। २०। एथ्वी योनियाप्रध्यीकार्यमें अस स्थावर उत्पन्न होता है मने स्थानवर उत्पन्न होता है। वह पेहले कपना उत्पन्न स्थावके किनायके पुरन्तीक ब्राहार लेके है बादमें हे कायाके गर्गक मुक्तियों पुरन्तीका खाडार लेके

त्रम स्थावर जीवोंका सचित श्रचित शरीरमें पृथ्वीकार्य उत्पन्न होनी है। ६६। अस स्थावर योनिया पृथ्वीकार्यमें

अपने गरिका बण, गन्ध ग्य च्यां नानापकाके बनाते हैं। नामके हुसीम उत्पन्न हाने हैं १००। देवना गुर्व्यार्थ रूपम होते हैं १११ व्हार मनापक।

. .

होता है। ६१।

हे भरवानमन् यह उपर लिखा योनिमें परिश्रमण करता स्थाना जीव सनादिकालंग मारा माग पीरणा है हुन्ही योनि-को मीडानेबाला श्री बीतरामका ज्ञान है हुन्हीं ग्रम्यक सकारे साराधना करों नातें श्रीर दूसरीदार योनिमें उत्पन्न होनाका करों न रहें । रस्त ।

॥ सेदंशन सेदंशने नम्ब महाम ॥

धोकटा नं. ६ - १९७० ५--(पृत्युति इत.)

स॰ झ॰ ब्याहारीक	ษ	3	3	3	Ę
स॰ पर्याप्त	v	28	\$8	१२	ξ
स० प० आहारीक	ิง	१४	\$8	१२	Ę
स० प० अनाहारीक	8	2	8	2	2
पांचेन्द्रिय	S.	१२	१५	१०	Ę
पां॰ अपर्याप्ता			¥	3	٤
पां० झ० अनाहारीक	२ २	W 24	8	=	Ę
पां० भ्रा० भाहारीक	વ	3	8	3	Ę
पं॰ पर्याप्ता	२	१२	\$8	१०	ξ
पां प॰ आहारीक	٦	१२	\$8	१०	1
चौरिन्द्रिमें	1 2	₹	8	Ę	13
ची० अपर्याप्तः	1	1 2	3	Ę	3
ची० अ० ग्रनाहारीक	1	1 2	१	벟	₹
ची० घ्रः आहारीक	! *	२	२	Ę	3
चाँ० प्रयोगार्मे	, ,	,	1 2	8	1
ची० प० आहार्गक	,	١	١̈́ २	8	13
तेडन्द्रिय	ą	3	8	¥	₹
ते ० द्रापयोप्ता	ે १	1 2	3	¥	1
न ः अ ० अनाहारीक	1 8	2	8	¥	₹
ने० अ० काहारीक	, 8	2	२	ł	₹

ते॰ पर्याप्ता	8	2	२	₹	₹
ते० प० आहारीक	8	3	२	ą	३
वेन्द्रिय	२	Q	8	¥	રૂ
वे० धपर्याप्ता	१	2	3	Ą	₹
वे॰ अ॰ अनाहारीक	१	ર	१	ų	Ę
वे० अ० आहारीक	१	२	२	¥	३
वे० पर्याप्ता	१	?	2	३	₹
वे० प० माहारीक	१	?	२	₹	₹
एकेन्द्रिय	8	१	ų	ą	8
ए० अपर्याप्ता	२	٤	₹	3	8
ए० झ० श्रनाहारीक	२	8	8	3	8
ए० घ० घाहारीक	२	8	ર	3	8
ए० पर्यामा	२	,	8	₹	3
ए० प० आहारीक	२	.	8	₹	3
श्चनिदृय	,	़े २	ধাত	1	1 8
श्र पयोमा)	₹	119	२	٤
श्रद अनाहारक	, >	÷	4	1 2	۶ ۽
भ - भाहारीक	,	,	¥ 5	, ર	,

॥ संबंभने सेबंभने नमंब स्बम् ॥

थोकडा नं.	
*O**	
(वह् श्रुतिकृत	
मार्गणा•	जी.
समुचय जीवमे	\$8
सकाय में	18
स॰ अपर्याप्ता	৩
स॰ ग्र॰ श्रनाद्दारीक	৩
स० थ्र० थाहारीक	৩
स॰ पर्याप्ता	૭

स० प० अनाहारीक सः पः द्याहारीक

पृ० अ० अनाहारीक

पृ० च्रा- द्यादारीक

पृर्ध्वाकायमे

ए० यपर्याप्ता

पृ० पर्याप्तामे पृ० प० ऋाहारीक

3 ч

E

3

ŧ ₹

₹

ţ ₹

ŧ

ŧ २

₹ ŧ

₹

ŧ २ 8 ₹

2 ₹

२ १

ર ţ

१२४

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव मद्यम् ॥

थोकडा नं. 🖘



१२६

मिश्र मनयोगमें व्यवहार मनयोगमें मृत्य वचनयोगमें ग्रमत्य वचनयोगम



थोकडा नम्बर. ६ *©्र** (बहुश्रुत इत)					
मार्गेणाः	जी॰	गु॰	यो॰	उ०	લે .
द्रव्यात्मा कपापात्मा योगात्मा उपयोगात्मा ज्ञानात्मा	१४ १४ १४ १४ ६ ६	१४ १२ १३ १४ १२	8.7 8.7 8.7 8.7	१२ १२ १२ १२ १२	
दशनात्मा चारितात्मा तीधामा पुलाक निग्रन्थ	2	1	१५ १५ 6	1 2 4 7 4 4	W W W
वृक्ष्म प्राप्तमेवना . कषायकुशील . निव्रत्य स्नातक		4 4 5	, 2 13 2	۶ و ا و ا	E E 2 2

१५⊏



(बहुश्रुति कृतः)

मार्गेणा-	ची.	IJ
ममुचप जीवमे	\$8	1
नारकीमें	1	١
ना॰ व्यपर्याप्ता	२	
	ી ર	١

ना० घ० भनाइारीक ना० थ० झाहारीक

ना० पर्याप्ता

ना - प - त्राहारीक

नीय चम বাহ ব্যামা र्ताः व्यवस्थान

STREET ती - पपामि ती १५ अ ५०० मन्ध्यम

र्ता - प्र



चतुर्वस्थका

प्रगान्त्रियका समेन्द्रियका स्पर्शन्त्रियका स्थलन्द्रियका ە ¦ ₃

૭

z

१३२



	१३४					
कृ प्णलेश्या	,,	111	=	१४	٤	ŧ
निललेखा	"	1 8	=	१४	8	₹
कायोगलेखा	••	8	=	24	3	3
नेजोलेर या	,,	18	ง	११	٤	\$
प्रमुलेखा	"	18	v	११	£	1
गुक्रलेस्या शुक्रलेस्या	"	1	,	۰	ર	١
शुक्रसरमा श्रलेश्या	",	188	13	શ્ય	,5	١
मलरपा संयोगिका		18	,		ર	١
सवासक मनुषोगिका	"	1:	1	١.	2	ŀ
	**	1	ì		२	ŀ
वचन०	,,	1 '	1 '		2	ŧ.
काययोगि	**	1	1			I.
द्मयोगि		18	, , 3	14.7	१२	ľ
सम्पग्दर्श		3.	်း	1 • 3	ફ	ŀ
मि भ्याई छी		٠,	, ,	· ¥	مُ	į
•मश्रद्रा णी			•	, A	1,5	i
यत हो			4	10	<u> </u>	ł
समजाका समजाका			13		1,5	1
##71°					ં ર	ļ
•						

B संक्रित संवर्धने तमेव संबंध ।



समर्गारंससंस्थान ।	२ 1	\$ 5	1 23	! ?!	Ę	. 1
	ર	58	24	82	Ę	,
निप्रोधमंस्यान	. 1		84	60	6	. ,
मादियमंग्थान	२	\$8	١٠,١	5.2	١,	1
वामन संस्थान	₹	\$8	14	१२	Ę	ì
कृष्य संस्थान	२	१४	१५	१२	Ę	ì
हुन्डक संस्थान	१४	۱,8	१४	१२	٩	÷
सावचीया (सिद्ध)		اه	۰	2	•	ì
सोवचीया (मध्य)	\$8	\$8	१५	१२	٤	1
सा॰ सो (पडवाइ)	१४	18	१४	१२	١	1
नि॰ नि॰ (द्यमव्य)	१४	1 8	18	Ę	٩	1
• • • •	١	ર	थाप्र	1 3	1	
ब्रह्मस्थ — े	18	85	8.9	१०	Ę	
भकेवली	1,3	5.8	6.7	१२	١	
श्रासिद		1,0	ε	,,	Į,	
सचितयोनि	,,		! `	١,	E	
श्रचितयोनि	, \$8	ક	ं १३	3	18	
मिश्रयोनि	1,58	1 2	۶۹			
शीतयानिमे	१२	1 3	Ę	Ę	18	
उष्णयोनिमे	5	1 1	₹	∣₹	₹	
प्रिश्रयोगिमे	! ૨	8	! ?₹	3	Ę	
मंत्रुपानम् मंत्रुतयोनिम	, '8	\$, ⊀₹	3	Ę	



थोकडा नम्बर, १३						13
(यह्भुत कृत)						
मार्गणा	जी.	गु.	यो.	ਤ.	₹.	}
षामुदेवकी धागति	1	8	१०	3	8	11
हारयादि सम्यक् द्रीष्टी	Ę	Ę	१४	૭	٤,	
अवती मनयोगमें	8	ą	१२	3	Ę	1.5
एकान्तमंत्री सम्प॰ व्यवरी	2	२	१३	Ę	٤	::
अग्रमत्त हारयादिमें	1 8	₹	११	v	,	
तेजोलेशी एकेन्द्रिमें	. : [8	3	3	1	
श्रमर गुणस्थानमें	0 1	3	१२	१२	٩	
स्रमर गु० छन्नस्य	₹,	۹ '	۶.,	१•	٩	:
भ्रमर गु० चन्मान्त	٧,	٦ !	/२	=	Ę	
यधाचात मर्याग	- 1	3	9.4	3	8	
गुगः ॰ चमसन्त	851	٦	۶₹	=	Ę	
मंगोग गु॰ चमगन्त	28	₹ ¦	१ ३	=	Ą	
छद्रम्थ गु० च∞	18	×	१३	१०	Ę	



180

(यहूमुत १	ρ α) .
(२८ लिय)	भव
मार्गेषा.	पुरुष
	1 +3

• •

((10-4)	- 1
मार्ग	चा.	1
व्यामीमहि	लन्धि	Ī
विष्योगहि	٠,	- 1
जलामांह	,,	- 1

मेलोसहि

मध्योमहि मांसमभाता श्चर्या बिजान ऋजायांन विभूलमान

. इ.चनज्ञान नुरस मरिहन

पुरुष	fè
ष्ट्ये	Ę

٠.



थोकडा नं. १५

(पद्गलपरावर्तन) व्यमंख्याते वर्षका एक पत्र्योपम होता है दश कीडाकी

पन्योपमका एक मागरीपम होता है दश को हाकीड मागरी पमका एक उत्मविंगी काल तथा दश कोडाकोड सागरोपमक एक अवसर्पिणी काल होता है इन्हीं उत्मर्पिणी अवसर्पिणीक मीला के बीम को डाकोड मानरीपम को शास कारीने एक काल मन कहा है एसे अनन्ते कालवकता एक पृहलक्षार्थन होता है वह मध्यक जीवों भूतकालमें अमन्ते अमन्ते प्रहला मार्थन क्रांचे हैं निर्मेष बोधके निये पुट्टनप्रधाननकी स्था ब्रहारमे बतलाते हैं यथा इच्या नेव, हाल, भार । प्रत्यहर्षे दी तो मेड है (१ मध्य - शहर वह उस शीहर

द र राज्य १००० । स्वर्ध gir gir ber bir bir bir bir bir gift gil

द्वार अकताया नापना

e ere nå

. mia 113



वर्गेला न श्रावे वह एक वर्गल कही जावे। इसीमाफीक वैकय वर्गणासे द्रय्यप्रदन करती वीचमे श्रीदारीकादि वर्गणासे द्रय्य

888 वैक्रयमे लिये हुवे सर्व इच्य गीनतीमे नही थर्यान फीरसे

लेवेतों गीनतीमे नहीं परन्तु सर्व लोकका द्रष्य बैकपरेही तेवे तीचमे दसरा मत्र नरूरे तों गीनतीमे खावे इंगी माफीर्र मानों वर्गलामे क्रमःसर सम्प्रस्य लोक द्रव्यप्रहन करे उन्हीकी इच्यापेचा ग्रचम पुट्टन परावर्तन केहते हैं.

 (३) क्षेत्रापेक्षा बादर पृद्रलपरायन—श्रमंख्याते कोडो न काट योजनके सिमास्याला यह लोक टै जिन्ही के बन्दर रहे इते बाकाम प्रदेश भी क्यंग्नाने है उन्हीं बाकाश बंदेशों हा एक इ.सम.च. एक इ.प्रटशान हजा समाच्या समा

ह्याच्या का अंगिके पार्तात । वार्तात हा का १७०० क

विवयम ५० ०० ० ० सम्बद्धा नोक्षक का प्रदेश के कर है वह

वानवाम १ ०० १ ५० । १ १८ इन्हीं हरूकार १८ के विकास समित है। इस्पर्ध



(४) कालापेचा यादर पुहलपरावर्तन —पील कोडा कोड सागरोपमका एक कालचक होता है उन्हीका समय असंख्याते है एक कालचकके पेहला समयमें बीव जन्ममस्य कीया पीता दुसरा कालचकके पेहला समयमें जन्ममस्य करे वह गीतानीमें नहीं पर्रोत अन्य असर्यो समयके अन्दर जन्म-सर्य करे वह गीतानीमें आवे हसी मासीक अन्दर जन्म-सर्य करे वह गीतानीमें आवे हसी मासीक जन्ममस्य करें करते सम्पुर्ण कालचकके सर्व समयोज जन्ममस्य करें उन्हीकों कालापेचा वादर पुहलपरावर्तन केहते हैं। उन्हींमें भी काल अवन्द पुरुष होते हैं।

(६) कालापेचा स्वय पुरुत्यपायरीन-प्योंक काल-चक्के प्रथम ममय जन्ममरण कीया और दूमरे कालाचकरे दूमरे समय जन्ममरण करे तो पीनमीम शेष ममयमें जन्म-मरण करे तो शीनतीम नहीं हमी माफीक तीमग्र कालचक्का तीमग्र ममयमे चीचा कालचक्के योचा ममयमे एवं कमाम्य सम्यमे जन्ममरण करे तो सीनतीम योगे किल्नु तियमे अस्य सम्यमे जन्ममरण करे तो सीनतीम योगे किल्नु तियमे अस्य सम्यमे जन्ममरण करे तो सा अगा प्लाम मागि हमी माफीक सम्यम्य काम्यस्य करे तो सा अगा प्लाम करे उसी माफीक सम्यम्य काम्यस्य करे तो स्वयं सम्यम्य काल्य अन्तनमुख्या लगता है।

८७) नावापनः बादर पृद्दन्यसम्बन् – हप**ेहे अनु**न







श्रंपुल एक यत्र एक युक्त एक लिख छे बालाप्र पांच स्पर-हारीया परमाण इतनी परादि है दश हजार जोजनका उंडा उन्हीं पालाके स्नाठ जोजनकी जगती। जगतीके उपर स्नादा जोजनकी वेदिका है गोल स्नाकार स्नर्यात् धान्यवरखेंकि पाहलीके स्नाकार पाला होते हैं।

१ शीलाक १ पत्ती १ पत्ती १ प्रान्ता १ प्रान्ता

एक स्थित नहीं है वह आगे चलके बतलाया जावेगा। अनवस्थित पाली एक लद्य योजनके विस्तारवालाकों सरमयक हाणीम पुराण वर्ग कि और विकंक उपर एक हाणी नहीं हेर पके। उन्हीं भी हो पालेकों कोट देवता हाथके अब्दर लंके एक माम्यद दाला दिएमें एक माहुरमें नाहती जावती चला जावे बहुतिक वह पाला साली न हो जावे.

श्रनवर्म्थित पाली केहनेका मतलब यह है कि जिन्हींकी

पालाका चरमदाना जीस द्विपमें या समुद्रमें डाला है वहां अनयस्थित पाला जीस द्विप या समुद्रमें पीलकुल खाली हो गया है उन्हीं द्विप या समुद्र जीवना लम्या चोडा विस्तार-वाला ओर दश हजार जोजनका उंडा आठ जोजनिक जगती आदा जोजनिक वेदिकावाला पाला बनाके सरसवके दानों से भरे भीर वहांसे उठाके आगे के द्विप समुद्रमें एकेक दाना डालते टालते चला जावे जहांतकिक वह पाला खाली न हो अर्थात उन्हीं पालामें शेष एक दाना रहे वहांपर उन्हीं पालाकों छोडदे और जो एक दाना रहा था उन्हींकों शीलाक नामका पालामें डालदे। कारणिक जो पेहले लच जोजन पिरमाणवाला पाला था उन्हींका परिमाण हो जानेके कारण पेहला दाना नहीं डाला था परंतु दुसरे दफे अनवस्थित होनेने चरमदान डाला गया है।

जिम डिप या ममुद्रमे अनवस्थित पाला खाने हुन था उन्हीं डिप या ममुद्र जीतन विस्तारवाला (उन्हें कर्ने विदेका पेहलेवन) पाला बनावे वह मरसवसे नुक्ते कर्ने दिका पेहलेवन) पाला बनावे वह मरसवसे नुक्ते कर्ने डिप ममुद्रमें एकेक दाना डालेते डालते क्ले बन्दे क्ले दिका पालते बात वरमका एक दाना रहे वह क्ले बन्दे कर्ने डाल देव जब शीलाक पालामें दो दान बन्दे कर्ने जीम डिप वा ममुद्रमें वह अनवस्थित पाल क्ले हान हो है उन्हों उन्हों कर्ने उनना विस्तारवाला पाला बनाके क्ले हे बन्दे कर्ने डिप ममुद्रमें एकेक दाना डाले हे बन्दे कर्ने बन्दे कर्ने डिप ममुद्रमें एकेक दाना डाले हे बन्दे कर्ने बन्दे कर्ने डिप ममुद्रमें एकेक दाना डाले हे बन्दे करने बन्दे करने इन्हों है विस्तारवाला पाला बनाके क्ले होने करने बन्दे करने इन्हों करने वाल डाले हे बन्दे करने करने इन्हों है विस्तारवाला पाला बनाके हमार बन्दे करने इन्हों करने करने इन्हों हमार बन्दे करने इन्हों करने इन्हों हमार बन्दे करने इन्हों इन्हों हमार बन्दे हमार

शीलाक पालामें तीन दाने जमा हुवे । जिस दिप वा समुद्रमें अनवस्थित पाला खाली हुवा था उन्ही दिप या समुद्र जीतना विस्तारवाला पाला बनाके सस्सवके दानासे भरके आगेका दिप समुद्रमें एकेकदाना डालते डालते

चला जावे शेष चरमका दानाशीलाक पालामें डाले तब शी-लाकपालामें च्यार दाने जमा दुवे । इमीमाफीक श्रमवस्थित पाला कि नवीनवी अवस्था होते एकेक दाना शीलाकमे डालते डालते लच जोजनके विस्तारवाला शीलाकपाल भी समपुरण भरा जाने तब धनवस्थित पालाकों जहाँ खाली हवा हैं वहारी छोड़ दे थीर शीलाकपालको हायमे ले के एकदाना द्विपमे एकदाना ममुद्रमे टालने डालने शेप एकदाना रहे वह व्यक्तिज्ञीलाकमे डाल देना अवशीलाक खानी पडा है पीछा श्रमवस्थितका पाला जो कि शीलकका चरमशाना जिस द्विप या समुद्रमे पडाथा उन्ही डिप या समुद्र जीतना अनवस्थित पाला बनाके सरसवके दानेमें भरके द्विप समृद्रमें डालुना जाने शेष एक दाना रहे बर फीरने शी बाक्यालाने डाले एकेक दाना डाल के पेटले कि माफीक शीनाकको अरदे कीर शीलाक की उठाके एकेक दाना दिया समुद्रमें डालने द्यालते शेष एक दाना गई वह प्रतिशीलाक्षमे दाले चब्र प्रति-शीलाकमें दो दाना जमा दुवे फीर अनवस्थित पालासे एकेक

दाना डालके शीलाक पालाको भरे और शीलकके एकेक दाना प्रतिशीलाकमे डालते जावे इसीमाफीक करते करते प्रतिशीलक पाला लच्च जोजनके परिमाण वाला भी सीखा सहित भरा जावे तब अनवस्थित शोर शीलाक दोनोको छोडके प्रतिशीलाककों हाथमे लेके एक दाना द्विपमे एक दाना सपुद्रमे डालते डालते शेप एक दाना रहे वह महा शीलाकमे हतदेना जीस द्विपमे प्रतिशीलाक पाला खाली हूचा है इतना विस्तारवाला श्रोर भी अनवस्थितपाला बनाके सरसवसे भरके भागेके द्विप समुद्रमे एकेक दाना डालता जावे पूर्ववत् समय-स्थितपालासे शीलाकपालाको एकेक दानासे भरदे श्रीर शीलाक भरा जावे तव शीलाकसे प्रतिशीलाक भरदे खाँर प्रति शीलाक पालासे पूर्ववन् एकेक दना डालते डालते महाशीकको भरदे आगे पांचमो कोइ भी पाला नहीं है इसी वास्ते महाशीलाक पाला भग राग ही रेहेना देवे और पीच्छले जो अनगस्थित पालामे क्षालाक और योज क्षीजाक पालामे प्रतिकालाक सरदे प्रतिशंक्षाक स्थाली करनेको अब महाप्रक्षिक्षणानामे दोना समावेस नहां हो शना है वास्ते पविश्वासाक भी नाम हुन रहे और धनगरियत पालासे शीलाक पाला भर देरे सामे प्रति शीलाकमें दाना समारेश हो नहीं शके हमी अस्ते शीलांक पाला भी भग हवा रहे और अन वस्थित पाला भरा ह्या है वह शीलाक पालामें दाना समावेश

निकलकर शेप रासी है वह उत्कृष्ट संख्याते हैं व्यर्शत दोय दानोंकों जघन्य संख्याते कहेते हैं ब्यौर पूर्व जो बतलाये हुवे तीन पालोंसे द्विप ममुद्रमें सरसवके दाने झौर च्यार पाले भरे हुवे दानोंकों मीलाके एक रासी करे तीन दानोंसे लगाके उन्ही रासीमें दो दाना कम हो यहांतक मध्यम संख्याते होते हैं और समीमें एक दाना कम होना उन्हीकों उत्कृष्ट संख्याने कहे जाते है और वह रहा हवा एक दाना रासीमें मीलादे अर्थात समपुरण रासीको जघन्य प्रत्येक असं-स्थान केडने हैं अर्थात पेइला डाले हुवे डिप ममुद्रके सर्व मरमव एकत्र करके भेरे होत्र न्यारी पालीके मरमव भी माधर्में मीलाके सबकी एक गयी बनादे उन्हीं गर्माकों जघन्य प्रत्येक भ्रमंख्याते कहेते हैं और उन्हें। रामीये मरसवका एक दाना निकाल लेवे तब शेष समीकों उत्कृष्ट सम्ब्याते केहते हैं खगर

हो दाना गर्मीमें निकाल लेवे तुर शेष शमीकों मध्यम

संस्थाने केंद्रते हैं।

848

माफीक च्यारो पाला भरा हवा है अब जो पीछे दिए समुदर्में सरसबके दाना डाला था उन्हीं सर्व दोनोंको एकत्र कर एक रासी बनावे उन्हीं रासीके अन्दर पूर्व भरे हवे च्यारों पालोंके सरसब दोने मीला देवे उन्हीं रासीके अन्दरसे एक दाना प्रत्येक उपन्य अमंख्यातीक जो रासी है उन्हीं को रासी अभ्यास करे पथा-कोई आचायोंका मण है कि जितना दाना रासीमें है उन्हीं जो उतना गुरा। करना जेसे कन्पनाकि रासीमें ६०० दाना हो तो सोकों सोगुरा। करनेसे ६०००० होता है। दुसरा आचायोंका मच है कि रासीमें जिनने दाने हैं उन्हीं को उतनीवार गुरा। करना जेसे रामीमें ६० दानोंकि कन्पना कि जाय।

```
(१) १०० प्रथम दराकों दशगुषा करतों.
(२) १००० मोकों दशगुषा.
(३) १०००० हजारको दशगुषा.
(४) १०००० हजारको दशगुषा.
४) १०००० हजारको दशगुषा
६ ००००० हजारको दशगुषा
६ ००००० हजारको दशगुषा
६ ००००० हजारको दशगुषा
६ ००००० हजारको दशगुषा
६ ०००००० हजारको दशगुषा
८ १००००००००० । । ।
यह तो कन्पनाकि स्मी हुद परन्तु जो जघन्य प्रत्येका
```

जो रासी आवे उन्हीकों जपन्य पुक्ता असंख्याते केहेवे हैं अगर उन्ही रासीसे दो दाने निकाल के फीर रासीकी प्रष्का करे तो यह दो दाने कम कीये दृह रासी मञ्चम प्रत्येक असे-स्थ्याते हैं अगर उन्हीं रासीमें एक दाना डालके पुच्छा के तो उन्हाट प्रत्येक असंख्याते हैं और दुसरा दाना डाल दें ती अपन्य पुक्ता असंख्याते होते हैं। (एक प्रायिसका के

जयस्य युक्ता असंख्याते कि जो सासी है उन्हींकों पूर्व-त्रम् सामी अभ्यागकर समीने दो दाने निकालके एड्डा करते वह सामी सध्यम पुका असंख्याते हैं अगर एक दाना डालके पुरुद्धा करते उन्हाए युक्ता अमेल्याते हैं आर रहा हुवा एक दाना डालके पुरुद्धा को तो जपस्य अमेल्याते असंख्याता होते हैं. जपस्यामंत्रमाने अमेल्या कि समीको सामी अभ्याम पूर्वत्रत करे उन्ही समीम टो दाना निकालके पुरुद्धा को तो तेष सामी अस्यामंत्रमाने अमेल्यान है एक दाना समीमें

भीला दे तो उन्क्रप्ट अमण्याने असम्यान होता है और दूसरी दाता जो मीला दे तो अथन्य प्रत्येक अनन्ता होता है. जयन्य प्रत्येक अनन्ता कि गर्भाको पूर्वेवद् सप्ती औ ज्याम करे उन्हीं रामीमें दो दाना निकालके शेष सभी कि

ममय परिमास)





पूर्वोक्त रासीके अन्दर यह ६ वोल मीलाके और तीनवार वर्ग करना और यह वर्ग रामी हो उन्होंके अन् रेजलग्राम केवलदर्गानके मन्ते पर्योग मीलानेमे उन्ह्राह अन अनन्त होता है परन्तु लोकालोको एमा कोह भी पड़ा नहीं है पासे शारकारोंने वह मर्च को आठमा मध्यम संग अनन्तामे ही गीता है तह पहेल्लीग्रम्य।

२१ योलोकी संख्या. (३) संख्याते के तीन वाल जयन्य मध्यम उत्दूष्ट (६) आसंख्याते के नव बोल (१) जबन्य प्रत्ये श्चसंख्याते, (२) मध्यम प्रे॰ श्र. . ३० उ० प्रश्च (४) जपन्यपुका असंख्याने, ५ मन्युका असंव, (६ उ॰ पु॰ धर्म॰, (७) जघन्य प्रथम गाउँ श्रमंख्यान, (म मध्यम असर्वाने असः - ः स्थान । ने असंस्थान औ ः अनन्ते हाः, प्रान्य प्रत्ये यन-ताः - 'माम्यः , ः ४० अन (८ । ते० यना अस्त । य । हा अस्ते (६ क्रमण यन्त्री धनस्त । प्रतान अस्ता अस्ता अस्ता । स मध्यमानने अनन्ता । र स्थानने यतन्ता इति,

॥ सेबंसंते सेवंशते तसंब सद्य ॥

